चन्दामामा
जनवरी १९९१

डायमण्ड कॉमिक्स
पेश करते हैं
तुमने ही कहा था कि तुम्हें बिना बाजू का स्वेटर चाहिए।
चाचा चौधरी और शेखइब्नबतूता
पलटू और शैतान पड़ोसी
ताऊ जी और दैत्य का आतंक
डायमंड कॉमिक्स डाइजेस्ट
मोटू पतलू 9
फैण्टम 1
अंकुर बाल बुक क्लब
सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :–
1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क दस रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमंड कामिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के साथ भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अंतर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।
सदस्यता का कूपन
मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क दस रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम ....
पिता का नाम ....
पता ....
डाकखाना .... जिला ....
डायमंड कामिक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा. क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा.

कॉलेज में बायोलॉजी लें या जियोलॉजी दोस्तों में टॉपर बनने के लिए क्लिअरेसिल है कम्पल्सरी.

क्योंकि क्लिअरेसिल त्वचा यानी ज़्यादा साफ़ त्वचा.

विषय जब दोस्त बनाने का हो, क्लिअरेसिल ऐसा फॉर्मूला है जो कभी फेल नहीं जाता.

जब त्वचा ज़्यादा साफ़ हो तब अपने आप सबकी नज़रें आपकी तरफ खिंची चली आती हैं.

क्लिअरेसिल तीन तरह से मुंहासों पर अपना असर दिखाती है:

एक-यह मुंहासों के अन्दर तक जाती है. दो-ज़्यादा चिकनाई हटाती है. और तीन-मुंहासों को सुखाकर मिटा देती है.

क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा. क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा.

DIFFERENT COLOUR COMBINATIONS • THE ONLY INTERNATIONAL QUALITY ERASER IN INDIA • PLEASANTLY SCENTED • WATCH OUT FOR MR CLEAN NEW 14 ROBOT ERASER SERIES • FOOTBALL ERASER • AVAILABLE IN 24 DIFFERENT COLOUR COMBINATIONS
Mr. Clean
My Little Darling,
Mr. Clean
WELCOME TO THE WONDERFUL WORLD
OF
ERASER
LOVE
HIT A CLEAN SIX
WITH CRICKET ERASER SET
SALES PROMOTIONAL & EXPORT ENQUIRIES SOLICITED
Mr. Clean
A Product Of FUN-TIME INC.
502, NIRANJAN BUILDING, 99, MARINE DRIVE,
BOMBAY-400 002. TEL: 317186, 318351, 310258
THE DOUBLE 'A' COMPANY
THE ONLY INTERNATIONAL QUALITY ERASER IN INDIA • PLEASANTLY SCENTED • WATCH OUT FOR MR CLEAN NEW 14 ROBOT ERASER SERIES • FOOTBALL ERASER • AVAILABLE IN 24
WATCH OUT FOR MR CLEAN NEW 14 ROBOT ERASER SERIES • FOOTBALL ERASER • AVAILABLE IN 24 DIFFERENT COLOUR COMBINAT
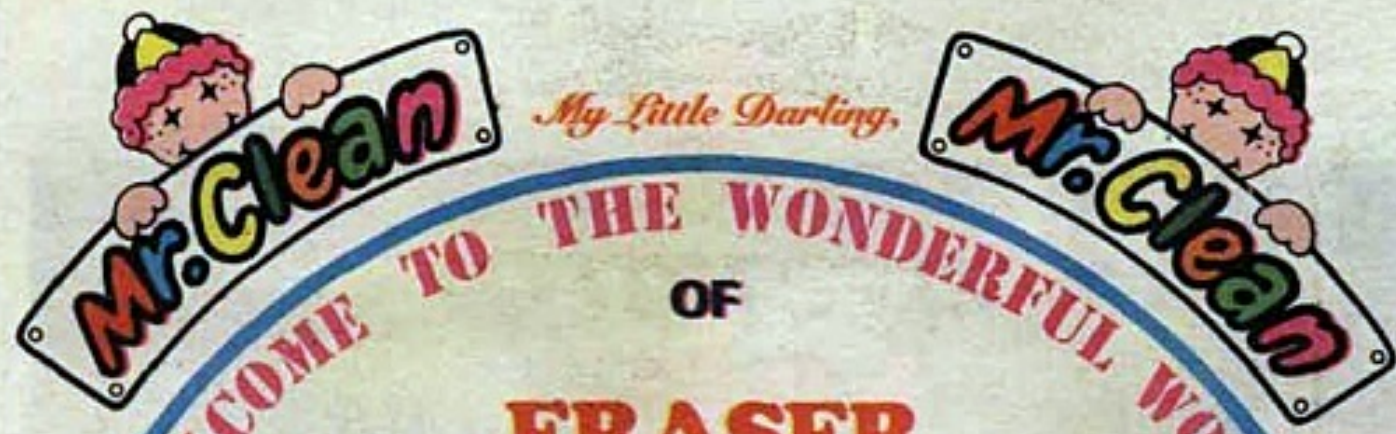
चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

यह हमारे अधिकार से परे है

सरकार की एक नीति के प्रति अपना विरोध जताने के लिए कई छात्र-छात्राओं ने अपनी जान ले ली । हम उनकी स्मृति में नत मस्तक हैं और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं ।

लेकिन हम अपने आपको झुठलायेंगे, यदि हम साफ-साफ यह नहीं कहेंगे कि विरोध जतलाने का यह तरीका कतई नहीं है । यदि हमें कुछ अन्यायपूर्ण लग रहा है तो हमें उसके खिलाफ तब तक आवाज़ उठानी चाहिए जब तक हम उठा सकते हैं । यदि विरोध जतलाने के दौरान कोई मारा जाये तो यह दूसरी बात है । लेकिन विरोध जतलाने के लिए अपनी जान ले लेना, यह बिलकुल अलग बात हो जाती है । हमारे यहाँ कई महान स्वतंत्रता-सेनानी हो गये हैं जिन्होंने अपने जीवन की आहुति दी, पर अपनी जान नहीं ली ।

हमरे लिए यह जानना ज़रूरी है कि हमारे अधिकार में क्या है और क्या उस अधिकार से परे है । अपनी जान लेना हमारे अधिकार में नहीं है । यह अधिकार केवल विधि का है ।

वर्ष : ४३ जनवरी १९९० अंक : ५

एक प्रति : ३ रुपये वार्षिक चन्दा : ३६ रुपये

कैम्पको की पेशकश
नई
एक्लेयर्स जिनके भीतर है ज़्यादा चॉकलेट
ज़रा खोलिए नए कैम्पको चॉकलेट
एक्लेयर्स का पैक, देखते-ही देखते आपके चारों ओर
मुस्कुराते चेहरे जमा हो जाएंगे... और आपके हाथों में
रह जाएगा, बस खाली पैक! मगर हाँ, आपकी खरी पसंद की
वाह-वाही आपको
ज़रूर मिलेगी.
कैम्पको
चॉकलेट एक्लेयर्स
मिल-जुलकर आनंद उठाइए
TOP QUALITY
LOW PRICE
Chocolate Eclairs
Campco
भारत के सबसे बड़े,
सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.
कैम्पको लिमिटेड, मैंगलोर
R K SWAMY/CL/8356/HIN
Campco chocolates
Milk
White
Treat
TURBO
Eclairs
Playtime
TOFFEE
Assorted Gift Box
Campco beverages
WINNER
COCOA

शांति की दिशा में एक लंबा कदम

पुराने वक्तों में रोम के लोग अकसर कहा करते थे: "अगर तुम्हें शांति चाहिए तो युद्ध की तैयारी करो ।"

लेकिन इस मान्यता से वे कभी शांति नहीं पा सके । युद्ध की तैयारी उन्हें आखिर युद्ध के कगार पर ले आती थी ।

दरअसल होता यह है कि एक तरफ यदि युद्ध की तैयारी चल रही हो तो दूसरी तरफ आशंका और भय का उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक है । इससे दूसरी तरफ वाले भी खतरे का सामना करने के लिए अपनी तैयारी में जुट जाते हैं । जब दोनों तरफ तैयारी हो तब कोई छोटी-सी घटना या मन-मुटाव युद्ध का कारण बन सकता है ।

रोमन काल से आज तक यही तो होता आया है । कई नेता घोषणा तो ज़ोर शोर से शांति की करते हैं, पर उनका झूठ बहुत जल्द पकड़ में आ जाता है, क्योंकि उनके देश की कमाई तो दूसरे देशों को अस्त्र-शस्त्र बेचकर होती है । यह कोई छोटा-मोटा धंधा नहीं है । यह तो वही बात हुई – बगल में छुरी, मुंह में राम-राम! एक कहावत यह भी कहती है कि यदि किसी को अपने भीतर शांति नहीं मिलती तो उसके लिए बाहर शांति की तलाश करना बेकार है । इसीलिए यह भी कहा जाता है कि वह व्यक्ति जिसने अपने भीतर शांति पा ली है, वह यदि शांति की बात करता है तो उसकी

बात में हमेशा दम होगा ।

सोवियत रूस के राष्ट्रपति मिखाइल सर्गेओविच गोर्बाचौफ ने यही कर दिखाया है । यह कहना कि वह शांति-प्रिय व्यक्ति है, काफी नहीं होगा । वह शांति-प्रिय ही नहीं, वह हिम्मत और साहस वाला व्यक्ति है । उससे पहले कम्यूनिस्ट तानाशाही के ज़माने में रूसी लोगों के साथ बहुत अन्याय हुआ । इसी प्रकार पोलैंड जैसे देशों के साथ भी बहुत अन्याय हुआ, क्योंकि उन्हें एड़ी तले कुचल दिया गया । उधर पश्चिमी देशों के साथ, विशेषकर अमरीका के साथ, अस्त्रों की होड़ लगी रहती थी और उसी पर गर्व किया जाता था । गोर्बाचौफ में यह कहने का साहस था कि जो कुछ भी किया जा रहा है, उस पर शर्म आनी चाहिए । हमें व्यक्ति की स्वतंत्रता, राष्ट्रों की स्वतंत्रता की कद्र करनी चाहिए, और आपस में सहयोग से आगे बढ़ना चाहिए, न कि एक-दूसरे का गला काटना चाहिए ।

गोर्बाचौफ के लिए नोबेल पुरस्कार की घोषणा एक बहुत बड़ी घटना है—इसलिए नहीं कि यह पुरस्कार सही व्यक्ति को मिल रहा है, बल्कि इसलिए कि संसार ने आखिर इस व्यक्ति के संघर्ष और आकांक्षा को पहचाना । इसी पहचान में भविष्य की उम्मीद छिपी हुई है ।

योग्य वर

चंदन देश के राजा विक्रम वर्मा के कोई बेटा न था, केवल एक बेटी थी। उसका नाम था श्रीलेखा। इकलौती संतान होने के कारण श्रीलेखा को बहुत लाड़-प्यार मिला था। जब वह बड़ी हुई तो सुंदर से सुंदरतम होती गयी। जितनी वह सुंदर थी, उतनी वह विद्वान भी थी। अपनी बेटी पर राजा विक्रम को गर्व था। उनका मन हमेशा खुशी से भरा रहता।

लेकिन साथ ही उन्हें उसके विवाह की चिंता भी सताती। इतनी सुंदर और तीक्ष्ण बुद्धि की बेटी को वह किसी ऐरे-गैरे को तो सौंप नहीं सकते थे। इसलिए योग्य वर की तलाश शुरू हुई। आखिर, दामाद ही तो आगे चलकर सिंहासन संभालेगा!

एक दिन विक्रम वर्मा के दरबार में एक पंडित आया। उसने अपना परिचय देते हुए कहा, "राजन्, मेरा नाम केशव भट्ट है। मैं मध्य देश से आ रहा हूँ। काशी और तक्षशिला के विद्यापीठों में ऐसा कोई विद्वान् नहीं जिसे मैं ने शास्त्रार्थ में पराजित नहीं किया। अनेक देशों के विद्वानों में मेरे सामने मुँह की खायी और वहाँ के राजाओं से मैं ने सम्मान पाया। यहाँ भी मैं शास्त्रार्थ करना चाहता हूँ। मैं तीन प्रश्न पूछूंगा जिनका उत्तर आपके यहाँ का कोई भी नागरिक दे सकता है। यदि उन में से एक भी सही उत्तर दे सका तो मैं उस के सामने अपना सिर नवाकर उसे प्रणाम करूंगा और उसे अपनी सारी

सीमा पांडे

हैं । आप अपने तीनों प्रश्न हमें कह सुनायें । हमारे विद्वान् तीन दिन के भीतर उनका उत्तर दे देंगे ।"

राजा के स्वर में गंभीरता थी ।

इस पर केशव भट्ट ने अपने प्रश्न कह सुनाये । पहला प्रश्न था- ऐसा कोई सच बतायें जिसे सच मानने से कोई इनकार न कर सके– लेकिन वह हो सरासर झूठ ।

दूसरा प्रश्न था– जो सुनाई न दे, वह कौन-सी आवाज़ है? और जो दिखाई न दे, वह कौन-सा दृश्य है?

तीसरा प्रश्न– वह कौन-सी बात है जो कंगाल से लेकर शाहंशाह तक, हर किसी को अपनी जकड़ में ले लेती है?

उपाधियां सौंपकर यहाँ से चलता बनूंगा । यदि मुझे उत्तर न मिला तो आपके यहाँ के विद्वान मुझे पालकी में बिठाकर, और उस पालकी को अपने कंधों पर उठाकर चलेंगे और आप मेरा सम्मान करेंगे । आपको यदि यह स्वीकार है तो मैं अपने प्रश्न सुना सकता हूँ ।"

केशव भट्ट की शर्तें वहाँ के विद्वानों को तो भारी लगीं ही, राजा विक्रम वर्मा को भी अच्छी नहीं लगीं । उनमें कहीं दर्प छिपा हुआ था । फिर भी वे सब चुप रहे और उन्होंने अपने भाव प्रकट नहीं होने दिये । आखिर राजा विक्रम वर्मा ही बोले, "पंडित महोदय, हमें आपकी शर्तें मंज़ूर

केशव भट्ट के प्रश्न सुनकर विक्रम वर्मा के यहाँ के पंडितों के चेहरे उतर गये । उनके चेहरों की रंगत देखकर केशव भट्ट मन ही मन बहुत खुश हुआ कि चलो, यहाँ भी विजयश्री उसी के हाथों रही । वह उन्हें उनके हाल पर छोड़कर वहाँ से चला आया ।

विक्रम वर्मा के पंडित केशव भट्ट के प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए काफी परेशान थे । वे बार-बार अपना सिर खुजला रहे थे । यदि उन्हें कोई उत्तर सूझता तो उसे विक्रम वर्मा को बताते, पर विक्रम वर्मा को कोई उत्तर जंच नहीं रहा था । आखिर उन्होंने तंग आकर कहा,

"बेशाक, केशव भट्ट अहंकारी है, पर उसकी बुद्धि की भी दाद देनी पड़ेगी ।..खैर, आप लोग अपनी कोशिश में लगे रहिए । हिम्मत मत छोड़िए ।" और फिर वह अपनी बेटी से भेंट करने अंत:पुर की ओर चल दिये ।

बेवक्त अंत:पुर में आये अपने पिता को देखकर श्रीलेखा कुछ हैरान हुई । पिता के चेहरे पर बड़ा तनाव था । बेटी के पूछने पर विक्रम वर्मा ने दरबार में घटी घटना का वृत्तांत कह सुनाय, और बोले, "बेटी, पराजय का डर है । वह अहंकारी है । अहंकारी के सामने पराजय का मतलब है एक तरह की मृत्यु । कोई संस्कारवान होता तो दूसरी बात थी । तब तो स्वयं को भी अच्छा लगता । अब तुम पर ही मेरी उम्मीद है!"

श्रीलेखा थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही । फिर बोली, "पिताजी, मुझे भी कुछ सूझ नहीं रहा!"

बेटी का उत्तर सुनकर राजा विक्रम वर्मा थोड़ा हताश हुए । फिर ऐसे ही उनके मुंह से निकल गया, "अब क्या होगा?"

पिता की परेशानी देखकर श्रीलेखा हलके से मुस्करायी । बोली, "पिताजी, इस में इतनी चिंता की क्या बात है! सुना है प्रधान मंत्री का बेटा राजशेखर बड़ा मेधावी है । वह इन प्रश्नों का उत्तर ज़रूर दे पायेगा!"

"तुम ठीक कहती हो?" राजा विक्रम वर्मा को थोड़ी हैरानी हुई । "चलो, उसे भी देख लेते हैं ।" और इतना कहकर विक्रम वर्मा वहाँ से चले आये ।

वहाँ से वह सीधे अपनी पटरानी वैजयंती के पास गये और उसे सारी बात कह सुनायी । फिर बोले, "श्रीलेखा के बारे में मैं अच्छी तरह जानता हूँ । यदि उसे उत्तर सूझे न होते तो वह देश की प्रतिष्ठा पर आंच आने वाली बात सुनकर ज़रूर विचलति हुई होती । पर ऐसा कुछ मुझे दीख नहीं पड़ा । उल्टे, उसके चेहरे

है । मुझे यह भी पता चला है कि राजशेखर भी उसे चाहता है । आप श्रीलेखा का संकेत समझिए । वह चाहती है कि आप राजशेखर के गुणों पर ध्यान दें और निर्णय करें कि क्या वह उसके लिए योग्य वर नहीं हो सकता!"

"फिर देर किस बात की है? तुरंत बुलवाओ उसे!" राजा विक्रम बोले ।

थोड़ी देर के बाद ही राजशेखर आ पहुँचा । उसके तीखे नैन – नक्श देखकर राजा मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए । प्यार से बोले, "बैठो, बेटा!"

राजशेखर बैठ गया ।

तब राज ने उसे केशव भट्ट के प्रश्न सुनाये और बोले, "श्रीलेखा को विश्वास है कि तुम इन प्रश्नों के उत्तर ज़रूर दे पाओगे!"

राजा की बात सुनकर राजशेखर धीमे से मुस्करा दिया । फिर बोला, "प्रभु, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि केशव भट्ट वाकई बहुत मेधावी है । उसने अपने प्रश्नों में शास्त्र, कल्पना और वास्तविकता, तीनों का पुट दे दिया है । पहला प्रश्न तर्क-शास्त्र से संबंध रखता है । इसका उत्तर है: मेरी कभी मृत्यु नहीं होती । यहाँ 'मेरी' 'आत्मा' के लिए है । यानी आत्मा की कभी मृत्यु नहीं होती ।

पर ऐसा विश्वास झलक रहा था जैसे राजशेखर ज़रूर उत्तर दे सकेगा । मैं तो इस से असमंजस में पड़ गया हूँ ।"

अब मुस्कराने की बारी रानी वैजयंती की थी । बोली, "यह असमंजस आप मुझे क्यों बता रहे हैं । क्या आप यह सोच रहे हैं कि एक स्त्री का मन दूसरी स्त्री ज़्यादा अच्छी तरह जानती है?"

विक्रम वर्मा हंसने लगे । बोले, "ऐसी बात नहीं । पर तुम्हारे मुंह से कुछ सुनना चाहता हूँ ।"

"सुनना ही चाहते हैं तो सुनिए ।" रानी वैजयंती कह रही थी, "मुझे पता चला है कि श्रीलेखा राजशेखर को चाहती

पर मृत्यु सच भी है, क्योंकि हर नश्वर वस्तु मृत्यु को प्राप्त होती है । पर आत्मा के संबंध में मृत्यु झूठ भी है ।"

राजशेखर की व्याख्या पर राजा मुग्ध हो गये । बोले, "तुम ठीक कहते हो । अब दूसरे प्रश्न का उत्तर बताओ, बेटे!"

"प्रभु! सुनाई न देने वाली आवाज़ आत्मा की आवाज़ है । वह मस्तिष्क तक ध्वनि-तरंगों के ज़रिये नहीं पहुँचती, मन के ज़रिये पहुँचती है । वह केवल अनुभव करने वाले को ही सुनाई देती है, दूसरों को नहीं । इसी प्रकार दिखाई न देने वाला दृश्य अपने मनोफलक का दृश्य है । उसे केवल भीतरी आंखों से ही देखा जा सकता है, और विचार करने वाला व्यक्ति ही उसे देख सकता है । यही है दूसरे प्रश्न का उत्तर ।"

राजा की प्रसन्नता का कोई वार-पार नहीं था ।उसने उसी भाव से अपनी रानी की ओर देखा ।

"क्या बात है, बेटे! अद्भुत!" रानी भी अब विभोर हो रही थी ।

"प्रभु, अब तीसरे प्रश्न का भी उत्तर सुनिए । जिस बात की कंगाल से लेकर शाहंशाह तक हर कोई जकड़ में आ जाता है, वह है प्रशंसा । प्रशंसा हर किसी को बांध लेती है । बिरला ही कोई इस से बचता है ।" राजशेखर सहज ही कह गया ।

तीसरे प्रश्न का उत्तर सुनते ही राजा विक्रम वर्मा खुशी से उछल पड़े और एकाएक कह उठे, "शाबाश, बेटे, शाबाश! तुम्हारी एक और परीक्षा लेनी है । बताओ, जो दृश्य मैं अब देख रहा हूँ और तुम्हें वह दिखई नहीं दे रहा, वह क्या है?"

"आप को भ्रम हो रहा है, महाराज," राजशेखर ने छूटते ही कहा । "जो दृश्य आप देख रहे हैं, वह मैं भी देख रहा हूँ ।"

राजा अचंभित हुए । बोले, "क्या कहते हो! अच्छा, तो बताओ वह दृश्य क्या है?"

राजशेखर पहले तो थोड़ा-सा हिचकिचाया, फिर बोला, "बस, आपकी

बेटी मेरे गले में वरमाला पहना रही है, यही वह दृश्य है!"

यह उत्तर पाकर रानी वैजयंती मन ही मन हंस पड़ी । लेकिन राजा विक्रम वर्मा ने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहा, "तीन प्रश्नों के उत्तर दे दिये तो समझ बैठे कि मेरी बेटी तुम्हारे गले में वरमाला डाल देगी?"

राजा का दिखावे का गुस्सा राजशेखर ताड़ गया । उत्तर में वह थोड़ा-सा हंसा और बोला, "आप के मन में यदि यह विचार न रहता, तो मेरे प्रश्नों की आप इस तरह प्रशंसा न करते । फिर, आप ने अपने राज-कार्यों की भी चिंता नहीं की और मेरी बुद्धि की परीक्षा लेने पर उतारू हो गये । तब इसका क्या अर्थ हो सकता है?"

राजशेखर का दो-टूक उत्तर राजा विक्रम वर्मा को भा गया और उन्होंने अपना बनवटी गुस्सा एक तरफ करते हुए राजशेखर को गले लगा लिया । फिर बोले, "तुम्हारा अविचल आत्म-विश्वास वाकई प्रशंसायोग्य हो । तुम श्रीलेखा के लिए हर तरह से योग्य हो । हम दोनों ने जो दृश्य देखा, वह हम शीघ्र ही दूसरों को भी दिखा देंगे ।"

अगले दिन जब दरबार लगा और उस में राजशेखर ने केशव भट्ट को उसके प्रश्नों के उत्तर सुनाये तो केशव भट्ट ने सहज ही अपनी हार मान ली और राजशेखर के सामने अपना माथा नवाकर खड़ा हो गया । फिर उसने अपनी सारी उपाधियां उसे सौंप दीं और अपना तोड़ा भी उसे पहना दिया ।

राजा ने उसे शुभ मुहूर्त जाना और दरबारियों की उपस्थिति में श्रीलेखा को इशारा किया कि वह राजशेखर के गले में वरमाला पहना दे ।

१६

(वीर सिंह के आदमी कनक दुर्गा की सोने की मूर्ति शंकर वर्मा के यहाँ से ज़बरदस्ती उठाकर ले गये थे । उसे युवराज संदीप ने बड़ी बहादुरी से उनसे छीना, और छीनकर शंकर वर्मा के हवाले कर दिया ।... अब आगे पढ़िए ।)

"ग़ज़ब! इसे क्या जादू कहें? और क्या हम ऐसी चालबाज़ियों से दब जायेंगे? हमारी इतनी बड़ी सेना किस काम की है?" मूर्ति के ग़ायब हो जाने की ख़बर पाकर वीर सिंह चिल्लाया ।

"बेशक, हमारे पास बहुत बड़ी सेना है, हुज़ूर, पर दैवी शक्ति के सामने इंसानों की क्या पेश जा सकती है! क्या आप ने खुद अपनी आंखों से नहीं देखा कि उस दिन जंगल के जानवरों ने हमारी क्या गत बना दी थी? उनके पीछे ज़रूर कोई जादुई शक्ति रही होगी, वरना वे ऐसा न कर पाते!" सेनापति सर्पदंत का उत्तर था ।

उसने समझ लिया था कि वीर सिंह के सामने जाकर ही बात करनी चाहिए, हालांकि उससे पहले वाला सेनापति

कपालकंठ उसके सामने अपना मुंह ज़्यादा नहीं खोल पाता था ।

वीर सिंह के पास इस तर्क का कोई उत्तर नहीं था । लेकिन वह हाथ-पांव छोड़कर चुप रह जाना भी नहीं चाहता था । अपनी बेचैनी दबाने के लिए वह अपने पूरे ज़ोर से चिल्लाया, "लेकिन हमें फौरन पता लगाना चाहिए कि मूर्ति गयी कहां । हम ऐसे ही यह बेइज़्ज़ती बर्दाश्त नहीं करेंगे!"

वीर सिंह की चीख की गूंज अभी मुश्किल से ही खत्म हुई थी कि उस का मुख्य गुप्तचर फुर्ती से दरबार में दाखिल हुआ । वह काफी उत्तेजित था ।

"अब क्या है?" वीर सिंह ने पूछा ।

"अन्नदाता, जो मूर्ति नाव से ग़ायब हुई थी, वह सरदार शंकर वर्मा के पास है । उस मूर्ति की स्थापना कल ही नये मंदिर में की जा रही है," गुप्तचर ने ख़बर दी ।

"ठीक कह रहे हो?"

"बिलकुल ठीक, अन्नदाता," गुप्तचर अपनी बात पर दृढ़ रहा ।

वीर सिंह उठ कर खड़ा हो गया । गुस्से से उसका चेहरा अंगारा हो रहा था । "इसका मतलब तो यह हुआ कि शंकर वर्मा ने ही मूर्ति हथियाने के लिए यह सब खेल खेला । हम उसे ऐसा सबक सिखायेंगे कि तमाम उम्र याद रखेगा!" दांत पीसते हुए उसने घोषणा की ।

"क्या मैं उसके महल पर चढ़ाई कर दूँ और मूर्ति को वापस ले आऊँ?" सर्पदंत ने सवाल किया ।

"ताकि फिर वह जादू से ग़ायब हो जाये?" वीर सिंह ने पलटकर उत्तर दिया । "मैं खुद जाऊँगा," उसने ललकार कर कहा ।

सर्पदंत का मन हो रहा था कि पूछे— जंगल में क्या आप खुद सेना का नेतृत्व नहीं कर रहे थे? क्या हासिल हुआ?— लेकिन वह चुप ही रहा ।

"हमारी सब से बढ़िया टुकड़ियाँ हमारे साथ चलने को तैयार करो । मैं मूर्ति अपने

कब्ज़े में रखूंगा । देखता हूँ शंकर वर्मा की जादूगरी तब क्या रंग लाती है!" वीर सिंह ने अपनी छाती ठोकते हुए कहा ।

* * *

जयपुरी के लोग बेहद खुश थे । मूर्ति का लौट आना उनके लिए एक अद्भुत घटना था, वे गदगद हो रहे थे । शंकर वर्मा ने युवराज संदीप से अपनी भेंट के बारे में किसी से कुछ नहीं कहा था । उसे उसने अपने तक ही रखा ।

लेकिन यह तो हो नहीं सकता था कि चुपचाप ही मूर्ति की स्थापना कर ली जाती । इसके लिए तो समारोह होना ज़रूरी था ।

इसलिए उस छोटे-से नगर में उत्सव का समाँ था । राजकुमारी सुकन्या एक क्षण के लिए भी मूर्ति को अपने से दूर करने को तैयार न थी । मूर्ति को जो भी देखता, दंग रह जाता । राजकुमारी को देखकर भी दंग रह जाना पड़ता ।

मूर्ति- स्थापना की शुभ घड़ी आ पहुंची थी । वादक अपने-अपने वाद्य बजा रहे थे । कहीं मृदंग बज रही थी, कहीं शंख की ध्वनि उठ रही थी, कहीं मंजीरे बज रहे थे और कहीं बांसुरी अपना तान सुना रही थी । पुजारी, सरदार शंकर वर्मा और राजकुमारी सुकन्या सब मिलकर मूर्ति को महल से मंदिर की ओर ले जा रहे थे ।

"रोको यह सब!" वीर सिंह चीखा ।

पहले तो वाद्य यंत्रों के बजने के कारण वीर सिंह का आदेश सुना नहीं जा सका, लेकिन जैसे ही वादकों ने घुड़सवारों को देखा, वैसे ही उनका संगीत रुक गया । वीर सिंह वहाँ पहुंच चुका था । उसके कुछ ही पीछे सर्पदंत तथा अंगरक्षक थे । सब घोड़ों पर सवार थे ।

"शंकर वर्मा, मुझे विश्वाास है तुम हम से युद्ध करना नहीं चाहते । अगर तुम चाहते हो तो आ जाओ! मेरी सेना इंतज़ार कर रही है," वीर सिंह ने ललकारा ।

"तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं न तुम्हारे साथ युद्ध करने की स्थिति में हूँ

"यह मेरी बेटी है, सुकन्या," शंकर वर्मा ने उत्तर दिया, "वह इस मूर्ति को बहुत चाहती है ।"

"मूर्ति को चाहती है?" वीर सिंह कुछ बड़बड़ाया और उसके साथ ही घोड़े से उतरकर शंकर वर्मा की तरफ बढ़ चला । "मैं तुमसे अलग से कुछ कहना चाहता हूँ," उसने उसके और निकट आते हुए कहा । उस समय उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी । वह फुसफुसाया, "मैं सुकन्या को बहुत चाहने लगा हूँ!"

"क्या कहते हो?" सरदार उबल पड़ा । वह अपना भाव छिपा न सका ।

"मैं मूर्ति को छोड़ दूंगा!"

"वह तुम्हारी मेहरबानी होगा!"

"लेकिन उसके बदले में मुझे सुकन्या चाहिए । मैं उससे शादी करूँगा । उसे अपनी पटरानी बनाऊंगा, सुमेध की पटरानी! वह शांतिपुर के आलीशान महल में रहकर बड़ी खुश होगी!" वीर सिंह की मुस्कराहट में कुटिलता थी ।

"वीर सिंह!" शंकर वर्मा चिल्लाया ।

"मेरा नाम लेकर पुकारने की तुम्हारी जुर्रत कैसे हुई? तुम मेरे एक मामूली सरदार हो । मुझे वैसे ही संबोधित करो जैसे कि एक राजा-महाराजा को करना चाहिए ।" वीर सिंह ने उसे चेताया ।

"वीर सिंह, तुम्हारी बेशर्मी की कोई

और न ही किसी और के साथ । मेरे पास कोई सेना नहीं है । मैं तो तुम से यही निवेदन कर सकता हूँ कि हमें शांति से रहने दो," शंकर वर्मा ने उत्तर दिया ।

"तुम्हारे लिए शांति ही शांति है, अगर तुम चुपचाप मूर्ति मेरे हवाले कर दो," वीर सिंह बोला ।

"नहीं, कभी नहीं," राजकुमारी सुकन्या चीख उठी ।

वीर सिंह हैरान हुआ, राजकुमारी की ओर देखने लगा । वह मूर्ति को अपने आलिंगन में लिये हुए उस पर झुकी हुई थी ।

"यह कौन है?" वीर सिंह ने पूछा ।

हद होनी चाहिए," शंकर वर्मा फिर चिल्लाया ।

"एक महाराज अगर अपने सरदार की बेटी से शादी करने का प्रस्ताव रखे तो इसे कब से बेशर्मी माना जाने लगा है? बेवकूफी मत करो, शंकर वर्मा । मूर्ति की सोचो । अपनी इस छोटी-सी जगीर की सोचो," वीर सिंह ने अपना तीर छोड़ा ।

"जहाँ मेरी इज़्ज़त दांव पर लगी हो, मैं सब कुछ छोड़ सकता हूँ," शंकर वर्मा उसी तरह से ज़ोर से बोल रहा था ।

"शंकर वर्मा, ज़रा सोचो । क्या मैं तुम्हारी बटी से शादी करके तुम्हें इज़्ज़त नहीं बख़्शूंगा? अगर तुम मेरी बात मान जाओ तो तुम मूर्ति अपने पास रख सकते हो । अगर नहीं मानते तो तुम्हें मूर्ति और बेटी, दोनों से हाथ धोना पड़ेगा । और साथ में तुम्हारी जागीर भी जायेगी । बेशक, तुम मुकाबला करोगे, पर वह किस काम का! खून तो रहेगा ही । तुम्हारे काफी आदमियों की लाशें बिछ जायेंगी, समझ लो ठीक से ।" वीर सिंह तीर पे तीर छोड़े जा रहा था ।

"पिताजी!" यह सुकन्या की आवाज़ थी । "आप इनकी बात मान लीजिए । मैं इनके साथ जाने को तैयार हूँ बशर्ते कि यह मूर्ति आप के पास रहने दें!"

"क्या? क्या कह रही हो, मेरी बेटी? होश में तो हो?" शंकर वर्मा हैरान-परेशान दिखने लगा था । उसे यह पता नहीं था कि जो नौजवान सुकन्या से बिलकुल सटकर खड़ा है, उसने उसी दौरन सुकन्या के कान में कुछ फुसफुसाया था जब शंकर वर्मा और वीर सिंह के बीच तकरार जारी थी ।

उसी नौजवान ने अब शंकर वर्मा की आंखों में भी झांका । शंकर वर्मा की आंखों में अब पहचान की चमक थी, हालांकि उस नौजवान ने पूरी तरह अपना भेस बदला हुआ था । कहने की ज़रूरत नहीं कि वह नौजवान और कोई नहीं, युवराज संदीप ही था ।

"मेरी बच्ची, तुम जो कह रही हो, मन से कह रही हो?" शंकर वर्मा ने उससे सवाल किया ।

"मैं बिलकुल मन से कह रही हूँ, क्यों कि मैं चाहती हूँ कि मूर्ति आपके पास ही रहे । दूसरे, मैं बेकार में खूनखराबा नहीं चाहती, क्योंकि यह तो तय ही है कि अगर हमने वीर सिंह की बात नहीं मानी तो संघर्ष तो होगा ही । तीसरे, वीर सिंह विवाह-योग्य है! क्यों, ठीक है न?" सुकन्या ने अपने चेहरे पर लाज ओढ़ते हुए प्रश्न किया ।

"वाह! क्या बात कही, राजकुमारी जी!" वीर सिंह विह्वल हुआ दिखता था ।

वीर सिंह के साथ राजकुमारी को विदा करने की तैयारियां पूरी हो चुकी थीं । वह रत्नजड़ित हौदे में अपनी मुख्य सहायिका के साथ हाथी पर बैठी थी । उसके आगे-आगे वीर सिंह, उसका सेनापति और उसके अंगरक्षक घोड़ों पर सवार चल रहे थे । उसके पीछे सेना थी ।

जैसे ही वे उस स्थन पर पहुंचे जहाँ से मूर्ति 'ग़ायब' हुई थी, मल्ली नाम के तोते ने राजकुमारी की गोद में एक चिट्ठी ला गिरायी । राजकुमारी की सहायिका के सिवा उसे और कोई नहीं देख सका ।

राजकुमारी ने पत्र पढ़ा और सहायिका के कान में कुछ फुसफुसाया । फिर उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और ऐसा दिखावा किया जैसे कि वह बेहोश होने को हो ।

"रोको! रोको!" सहायिका चिल्लायी ।

बारात रुक गयी ।

"राजकुमारी को नीचे उतारो । उसकी तबीयत ठीक नहीं । वैद्य को बुलाओ । फौरन! अगर जयपुरी से इसका निजी वैद्य बुला सको तो और भी अच्छा रहेगा!" सहायिका कहती गयी ।

वीर सिंह चिंतित हो उठा था । उसने आदेश दिया कि वहां खेमा गड़ दिया जाये । इसके एक घंटे के भीतर ही वैद्य और उसकी दो सहायिकाएं- उस स्थल पर पहुंच गयीं ।

वैद्य खेमे के भीतर दाखिल हुआ, और कुछ ही देर बाद वह बाहर आ गया ।
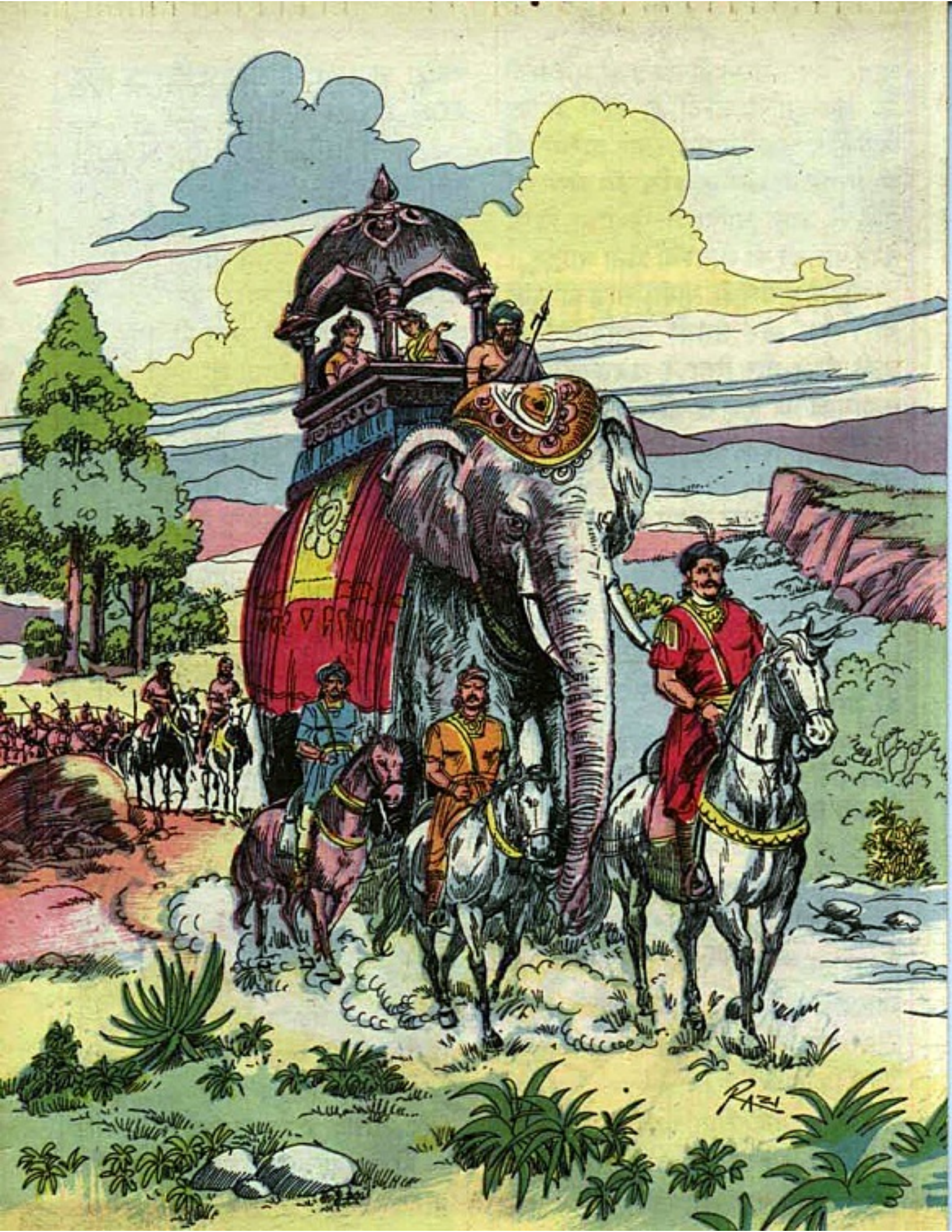
बाहर आकर उसने वीर सिंह को सूचना दी कि राजकुमारी जल्दी ही होश में आ जायेगी । उसने उसके लिए आराम की भी सलाह दी और कहा कि उसे हाथी पर नहीं ले जाना चाहिए । किसी न किसी तरह पालकी की व्यवस्था होनी चाहिए ।

जब तक पालकी आयी, शाम हो चुकी थी । वैद्य और उसकी सहायिकाएँ जा चुकी थीं । वीर सिंह ने राजकुमारी की सहायिका को पुकारा और उससे जानना चाहा कि क्या राजकुमारी यात्रा के लिए अब तैयार है ।

''स्वयं ही भीतर जाइए और उससे पूछ लीजिए,'' सहायिका ने अर्थभरी मुस्कान से उत्तर दिया ।

वीर सिंह इशारा समझ गया । खेमे में दाखिल होकर उसने अपने गले से खांसने की आवाज़ की ।

''महारानी!'' उसने बड़े प्यार से पुकारा और उसके बिस्तर की ओर बढ़ने लगा । बिस्तर पर केवल मोम बत्ती का प्रकाश था । रेशमी दोशाले के नीचे कुछ हरकत हो रही थी ।

''महारानी!'' उसने राजकुमारी का हाथ समझकर उसे छूने की कोशिश की ।

उसे छूना था कि फुदककर एक बंदर खड़ा हो गया और उसने ज़ोर से वीर सिंह के मुंह पर थप्पड़ मारा, फिर एक ही छलांग में वह खेमे से बाहर हो गया ।

वीर सिंह के काटो तो खून नहीं । मारे शर्म के वह चिल्ला भी न सका । यह सब हुआ कैसे? क्या यह फिर जादू का करिश्मा है? क्या कोई राजकुमारी को बंदर में तब्दील कर सकता है? अगर ऐसी बात ही है तो फिर बंदर राजकुमारी में भी तब्दील हो सकता है! वह कैसे बरदाश्त कर सकता है कि इतनी सुंदर राजकुमारी बंदर बन जाये और उसके हाथ से खिसक जाये?

''पकड़ लो! पकड़ लो इसे!'' वह खेमे से बाहर आते-आते ज़ोर से चीखा ।

(जारी)

कीर्तिचंद्रिका का निर्णय

राजा विक्रम ने ज़िद नहीं छोड़ी । वह फिर उसी पेड़ के निकट पहुँचे । पेड़ की शाखा पर लाश उसी तरह लटक रही थी । उन्होंने उसे कंधे पर डाल लिया और हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़े ।

श्मशान की ओर बढ़ रहे थे तो लाश में विराजमान बैताल इन शब्दों में बोला, "हे राजन्, आप धन्य हैं । आपका यह हठ धन्य है । आपकी सहन-शक्ति भी धन्य है । पर मुझे डर है कि कहीं आप विवेक का दामन न छोड़ दें, या बेमतलब हठ पर तुले रहें । इसलिए मैं आपको कीर्तिचंद्रिका की कथा सुनाता हूँ । कीर्तिचंद्रिका एक राजकुमारी थी । सुनिए, ताकि आपका ध्यान बंटा रहे और आपको थकान महसूस न हो ।"

फिर बैताल ने यह कहानी सुनायी:

स्वर्णदीप्ति नामक राज्य पर राजा विश्वक्रांत का शासन था । विश्वक्रांत

बैताल कथाएँ

बहुत लोकप्रिय था । उसे अजातशत्रु नाम से भी पुकारा जाता था। वह अपने आस-पास के राजाओं के लिए आदर्श था ।

विश्वक्रांत का एक ही पुत्र था । उसका नाम था चंद्रदीप्त । चंद्रदीप्त सर्वगुण-संपन्न था । वह पराक्रमी भी था । चारों ओर उसकी ख्याति और यश फैल रहा था । हर राजा यही चाह रहा था कि उसकी विवाहयोग्य पुत्री का विवाह उसी से करे । ऐसे राजाओं में एक राजा था सूर्यकेतु । वह सौगंधी राज्य का राजा था ।

सूर्यकेतु और विश्वक्रांत आपस में मित्र थे । सूर्यकेतु की बेटी का नाम कीर्तिचंद्रिका था । कीर्तिचंद्रिका के बारे में सूर्यकेतु को पता चल गया था कि उसका मन चंद्रदीप्त पर लगा हुआ है और वह उसी से विवाह करना चाहती है ।

अपनी बेटी के बारे में ऐसी खबर पाकर सूर्यकेतु स्वयं ही विश्वक्रांत के यहाँ जा पहुँचा और उससे बोला "मित्र, मैं तुम्हारे पुत्र के गुणों को जानता हूँ । तुम भी मेरी पुत्री को देख चुके हो । इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा पुत्र और मेरी पुत्री आपस में विवाह-सूत्र में बंध जायें । कहो, तुम्हारा क्या विचार है? इससे हमारी मित्रता और बढ़ेगी ।"

सूर्यकेतु के प्रस्ताव से विश्वक्रांत भी बहुत खुश हुआ और उसने अपने पुत्र चंद्रदीप्त को तुरंत बुला भेजा ।

पिता के मन की बात जानकर चंद्रदीप्त कुछ परेशान हुआ और बोला, "क्षमा कीजिए पिता जी, मैं सागरिका की युवरानी मनोज्ञमाला से प्यार करता हूँ और उसी से शादी करना चाहता हूँ ।"

विश्वक्रांत थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा । फिर बोला, "ठीक है । शादी का मामला तुम्हारा अपना मामला है । मैं इस में दखल नहीं दूँगा। पर तुम अगर कीर्तिचंद्रिका से शादी करने को राज़ी हो पाते तो सूर्यकेतु और मैं आपस में समधी भी बन जाते । खैर! अब तुम जा सकते हो ।"

चंद्रदीप्त जाने को हुआ तो सूर्यकेतु ने उसे रोका, "बेटे, कीर्तिचंद्रिका तन-मन से तुम्हें ही चाहती है । वह हमेशा तुम्हारा ही स्मरण करती है । तुम उसे मत ठुकराओ!"

लेकिन चंद्रदीप्त राज़ी नहीं हुआ । उसने बड़े मीठे ढंग से टाल दिया । मजबूर होकर सूर्यकेतु विश्वक्रांत से बोला, "चंद्रदीप्त अभी नादान है । उसे अभी उतना अनुभव नहीं । तुम उसे समझाने की कोशिश करो ।"

विश्वक्रांत असमंजस में पड़ गया । फिर बोला, "शादी-ब्याह के मामले में ज़ोर-जबरदस्ती अच्छी नहीं होती मित्र!"

"तो ठीक है, तुम उससे कहो मनोज्ञमाला के साथ-साथ वह मेरी बेटी से भी शादी कर ले!" सूर्यकेतु ने निराशा-भरे स्वर में कहा ।

पिता उत्तर दे, इससे पहले ही चंद्रदीप्त बोल उठा, "क्षमा कीजिए, हमारे यहाँ ऐसी प्रथा नहीं है । हम केवल एक ही कन्या से विवाह करते हैं ।"

यह सुनकर सुर्यकेतु, एकदम गुस्से में आ गया, "इस शादी से इनकार करोगे तो परिणाम के लिए भी तैयार रहो ।" और यह कहकर वह भनभुनाता हुआ अपने रथ में जा बैठा ।

अभी एक ही सप्ताह बीता था कि सूर्यकेतु

ने विश्वक्रांत के राज्य पर चढ़ाई करने की घोषणा कर दी । इससे विश्वक्रांत विचलित हो गया । उसके दिल को बहुत चोट लगी । फिर उसे गुस्सा भी आया और मजबूरी में वह भी उसे मुंहतोड़ जवाब देने की तैयारी में लग गया ।

विश्वक्रांत जब युद्ध के लिए निकल रहा था तो उसके बेटे चंद्रदीप्त ने कहा, "पिताजी, इस युद्ध का कारण मैं हूँ । इसलिए सूर्यकेतु का सामना मुझे करना चाहिए । इससे दूसरे राजाओं को भी पता चल जायेगा कि मेरा पराक्रम किस प्रकार का है!"

कीर्तिचंद्रिका को अपने पिता का विश्वक्रांत के साथ युद्ध करना कतई पसंद

नहीं था। उसी की शादी के सवाल ने यह स्थिति पैदा की थी। इससे उसका मन उदास हो गया।

काफी सोच-विचार के बाद कीर्तिचंद्रिका एक निर्णय पर पहुँची। युद्ध-कला में वह भी निपुण थी। इसलिए उसने निर्णय लिया कि अपने राज्य की ओर से वह स्वयं चंद्रदीप्त का मुकाबला करेगी। यदि वह हार जाती है तो निस्संदेह चंद्रदीप्त मनोज्ञमाला से शादी करेगा, पर यदि वह जीत गयी तो बरबस चंद्रदीप्त को उसके साथ विवाह करना पड़ेगा। क्यों, कैसा रहेगा? पर क्या वह चंद्रदीप्त को हरा पायेगी?

कीर्तिचंद्रिका के मन में उतार-चढ़ाव चल रहे थे। उसे अपने गुरु की बातें याद आयीं। पास ही दक्षकारण्य था। वहाँ नीलांबर नाम के एक मुनि रहते थे। उन्होंने घोर तप किया था। यदि उन्हें कोई बात न्यायसंगत लगे तो वह ज़रूर उसके पूरा होने के लिए वरदान देंगे।

इस विचार के मन में आते ही कीर्तिचंद्रिका अपने घोड़े पर बैठी और उसे सरपट दौड़ाती हुई दक्षकारण्य में नीलांबर मुनि से मिलने चल दी। मुनि के यहाँ पहुँचकर उसने उन्हें सारी बात कह सुनायी और अपनी समस्या उनके सामने रखी। मुनि कुछ देर सोचते रहे। फिर बोले, "बेटी, मैं तुम्हें खड्गसिद्धि का मंत्र दूंगा। उस मंत्र के प्रभाव से तुम अपनी तलवार को

हवा के वेग से चला पाओगी । बड़े से बड़ा योद्धा भी उस समय तुम्हारे सामने टिक नहीं पायेगा ।" और इतना कहकर मुनि नीलांबर ने उसे वह मंत्र दे दिया ।

मंत्र की शक्ति पाकर कीर्तिचंद्रिका बहुत संतुष्ट हुई । उसने मुनि के प्रति हृदय से अपनी कृतज्ञता प्रकट की और अपनी राजधानी लौट आयी । राजधानी में पहुँचकर उसने अपने पिता को भी मंत्र-प्राप्ति की शुभ सूचना दी । यह सूचना पाकर सूर्यकेतु बहुत खुश हुआ और बोला, "बेटी, तुम चंद्रदीप्त से अवश्य युद्ध करो । पर यह युद्ध द्वंद्व-युद्ध होगा, और तुम युद्ध के लिए पुरुष वेश में उतरोगी ।" फिर उसने अपने दूत के हाथों विश्वक्रांत को यह खबर भिजवायी कि युद्ध केवल दो योद्धाओं के बीच होगा । एक तरफ चंद्रदीप्त होगा और दूसरी तरफ सूर्यकेतु के राज्य का एक वीर सैनिक । दोनों आपस में खड्गयुद्ध करेंगे । यदि इस युद्ध में चंद्रदीप्त हार गया तो स्वर्णदीप्ति राज्य सूर्यकेतु का होगा, और यदि सौगंधी का सैनिक हार गया तो सौगंधी राज्य विश्वक्रांति का हो जायेगा ।

यह चुनौती विश्वक्रांत ने तुरंत स्वीकार कर ली । एक तरफ पुरुष वेश में कीर्तिचंद्रिका थी और दूसरी तरफ चंद्रदीप्त । युद्ध घमासान था । कीर्तिचंद्रिका के लिए चंद्रदीप्त के वार सहना मुश्किल हो रहा था । तब उसने मुनि नीलांबर द्वारा दिये गये मंत्र को याद किया ।

तुरंत उसके हाथ की तलवार बिजली-सी चमकने लगी और वह वार पर वार करने लगी । एक पल के लिए चंद्रदीप्त परेशान हो गया । वह समझ न पाया कि इस वेग का कारण क्या है । फिर दूसरे ही पल तलवार उसके हाथ से छूट कर दूर जा गिरी ।

अब चंद्रदीप्त सूर्यकेतु की कैद में था । सूर्यकेतु उसे अपनी राजधानी में ले आया और उससे बोला "अब भी वक्त है कि तुम सही निर्णय लो । तुम्हें हराने वाला और कोई नहीं, मेरी बेटी ही है । वह पुरुष वेश में है । तुम मेरी बेटी को अपना लोगे तो यह राज्य भी तुम्हारा ही हो जायेगा !"

"क्षमा कीजिए, महाराज, आपकी बेटी को अपनाने के बारे में मैं पहले ही आपको बता चुका हूँ । उस निर्णय में अब भी कोई परिवर्तन नहीं ।" चंद्रदीप्त का उत्तर था ।

चंद्रदीप्त का उत्तर पाकर सूर्यकेतु तो निराश हुआ ही, कीर्तिचंद्रिका भी बहुत निराश हुई । उधर मनोज्ञमाला के पिता राजा सोमवर्मा को जब पता चला कि सूर्यकेतु ने चंद्रदीप्त को बंदी बना लिया है तो उसने सूर्यकेतु पर चढ़ाई कर दी । सूर्यकेतु थोड़ी देर के लिए तो विचलित हुआ, फिर अपनी बेटी से बोला, "सोमवर्मा की युद्ध घोषणा पर तुम चिंता मत करो । उसकी सेना हमारी सेना के सामने टिक नहीं पायेगी । मुझे विश्वास है, हमारा सेनापति उन्हें जल्दी ही खदेड़ देगा ।"

अब तक जो बीता था, उसे लेकर कीर्तिचंद्रिका सोच में पड़ गयी । फिर अपने पिता से बोली, "पिता जी, मैंने अपना निर्णय बदल दिया है । मैं चंद्रदीप्त का विवाह अपने हाथों मनोज्ञमाला से करवाऊँगी, और विवाह के समय वहीं रहूंगी ।"

सूर्यकेतु ने स्वीकार में अपना सिर हिला दिया और अपने एक मंत्री के हाथ विश्वक्रांत के लिए एक पत्र भेजा । पत्र में इस प्रकार लिखा था, "मेरी बेटी ने तुम्हारे बेटे को एक मंत्र के बल पर पराजित किया । अपनी शक्ति द्वारा नहीं । इसलिए तुम्हारी हार

नहीं हुई है । तुम्हारा राज्य तुम्हारा रहेगा । चंद्रदीप्त का विवाह मनोज्ञमाला से ही होगा, लेकिन यह विवाह कीर्तिचंद्रिका की उपस्थिति में होगा ।"

बैताल ने यह सारी कहानी सुनाकर राजा विक्रम से पूछा, "राजन्, कोई संदेह नहीं कि कीर्तिचंद्रिका ने चंद्रदीप्त से दिल से प्यार किया था । चंद्रदीप्त ने जब उसे ठुकराया, तो कीर्तिचंद्रिका ने मुनि नीलांबर से प्राप्त मंत्र द्वारा उसे हरा दिया और उसे अपने वश में करना चाहा । लेकिन द्वंद्वयुद्ध जीतकर भी वह चंद्रदीप्त का दिल नहीं जीत पायी । इस स्थिति में कीर्तिचंद्रिका ने चंद्रदीप्त से बदला न लेकर मनोज्ञमाला से उसका विवाह क्यों करवाया? क्या यह सब अविवेकपूर्ण और अर्थहीन नहीं लगता? इन सब प्रश्नों के उत्तर जानकर भी यदि तुम उन्हें नहीं बताते तो तुम्हारा सर फट जायेगा ।"

इस पर राजा विक्रम बोला, "कीर्तिचंद्रिका असल में सात्विक वृत्ति की थी । वह युद्ध भी नहीं करना चाहती थी । चंद्रिदीप्त से वह बहुत प्यार करती थी, पर वह युद्ध में हारना भी नहीं चाहती थी । इसीलिए उसने मुनि की सहायता ली । अपनी पराजय पर चंद्रदीप्त जब मनोज्ञमाला के लिए अपना राज्य भी खो देने को तैयार हो गया तो कीर्तिचंद्रिका समझ गयी कि वह मनोज्ञमाला से कितना प्यार करता है । उसकी स्त्री-सुलभ सहन शीलता और त्याग उसपर हावी हो गये और उसने स्वयं ही चंद्रदीप्त और मनोज्ञमाला के विवाह की व्यवस्था कर दी । अब इस में अविवेकपूर्ण और अर्थहीन क्या है?"

राजा विक्रम का इस तरह जैसे ही मौन भंग हुआ वैसे ही वह शव के साथ ग़ायब हो गया और पहले की तरह पेड़ की एक शाखा से लटकने लगा ।

(कल्पित)

(आधार: शिव नागेश की रचना)

बुद्धि और अतिबुद्धि

सोमनाथ का ख्याल था कि उसका बेटा सुनंद बड़ा ही बुद्धिमान् है । इसलिए वह उसे शहर में निर्मलानंद के यहाँ ले गया और उनसे अनुरोध किया कि वह उसे शिक्षा-दीक्षा दें ।

कुछ दिनों के बाद सोमनाथ को शहर जाने का इत्तफ़ाक हुआ । वहाँ उसे अपने बेटे का भी ख्याल आया । और वह उससे मिलने निर्मलानंद के यहाँ पहुंचा । निर्मलानंद उसे देखते ही बोले, "तुम्हारा पुत्र तो अतिबुद्धि वाला है । इसलिए इसे पढ़ाना बड़ा मुश्किल है ।"

सोमनाथ के गले यह बात नहीं उतरी । वह बोला, "कहीं गलतफहमी है । मेरा बेटा तो बहुत कुशाग्र है । लगता है आप ही उस पर ठीक से ध्यान नहीं दे पाते होंगे!"

गुरु निर्मलानंद सोमनाथ के उत्तर से दु:खी हो उठे । उन्होंने फैसला किया कि सोमनाथ को सुनंद की बुद्धि का परिचय मिलना ही चाहिए । उन्होंने सुनंद को अपने पास बुलाया और बोले, "सुनो सुनंद, बहुत पहले हमारे देश में ऐसे बुनकर थे जो कमाल की साड़ियाँ बुना करते थे । उन साड़ियों को बड़ी आसानी से दियासलाई की डिबियों में रखा जा सकता था । मेरी बात समझ में आयी?"

सुनंद ने 'हाँ' में अपना सर हिला दिया ।

"अच्छा, अब बताओ तुम्हारी समझ में क्या आया?" गुरु निर्मलानंद का प्रश्न था ।

"यही कि उन दिनों दियासलाई की डिबियाँ इतनी बड़ी बना दी जाती थीं कि साड़ियाँ उन में आसानी से समा जाती थीं ।" सुनंद ने फराटे से उत्तर दिया ।

अब सोमनाथ की समझ में आया कि गुरु निर्मलानंद क्या कहना चाहते हैं । उसके सामने बुद्धि और अतिबुद्धि के बीच रहा भेद भी स्पष्ट हो गया । उसने गुरु निर्मलानंद के लिए इस्तेमाल किये गये अपने शब्द वापस लेने चाहे और उनसे क्षमा मांगी । फिर उसने उनसे विनती की कि वह किसी तरह उसके बेटे को सही रास्ते पर लायें और उसे शिक्षा देना जारी रखें ।

गुरु से आश्वासन का वचन लेकर ही सोमनाथ अपने घर को लौटा ।

—शशि दुबे
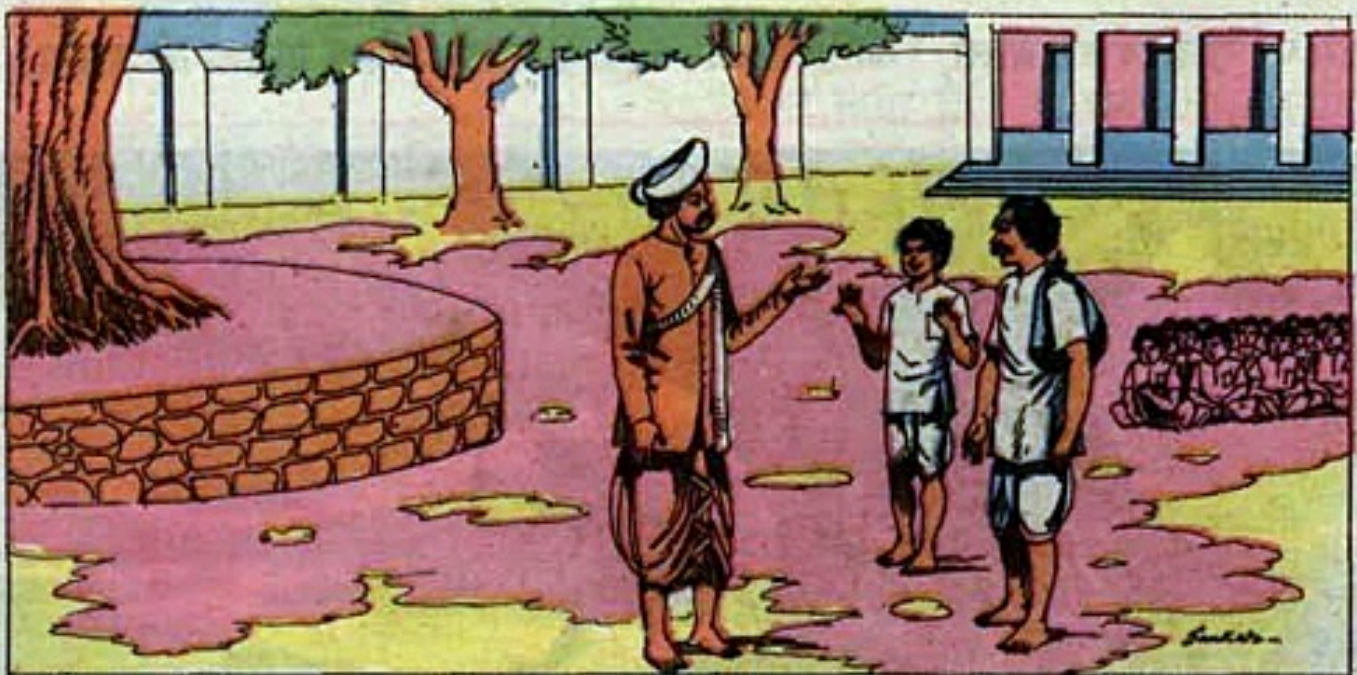
चन्दामामा परिशिष्ट-२५

उनके सपनों का भारत

आत्म-आहुति

बिपिन चंद्र पाल (१८५८-१९३२), जिन का जन्म आज के बंगला देश के साइचेल इलाके में हुआ था, राष्ट्रवादियों में विलक्षण थे। वह एक शानदार आयोजक थे और ग़ज़ब के वक्ता थे। उन्होंने असहयोग के आदर्श को आगे बढ़ाया और अंगरेज़ों द्वारा हमेशा को परेशान किये जाते रहे। उन्हें लग रहा था कि भारत में एक नयी भावना जड़ पकड़ रही है।

उन्हीं के अपने शब्दों में: "यह सब से मांग कर रही है—नेताओं से, कार्यकर्ताओं से, कवियों से, पैगंबरों से, दार्शनिकों से, नीतिज्ञों से, आयोजकों से, मैदान में उतरकर काम करने वालों से कि इस पवित्र अनुष्ठान में अपना योग दें। और जिन्हें यह मांग स्वीकार है, उन से आत्म-आहुति की इतनी बड़ी मांग की जा रही है जो पहले आज के भारत में कभी नहीं की गयी। उन्हें न केवल अपने आराम के क्षण और अपनी जमा पूंजी मातृभूमि को अर्पित करनी होगी, बल्कि उन्हें अपनी तमाम मेहनत की कमाई भी होम देनी होगी।"

वक्त आ गया है कि हम अपने से प्रश्न करें: यह भावना हम में अब कितनी बची है? दूसरे, इस महान् देश भक्त की आशाओं को हमने कितना पूरा किया?"

क्या तुम जानते हो?

१. पहली बार हृदयरोपन किसने किया?
२. वह कौन व्यक्ति था जिसका सब से पहली बार हृदयरोपन हुआ?
३. ईसा को जब सूली पर चढ़ाया गया तब कौन रोमन सम्राट् था?
४. सब से बड़ी किस्म के बंदर का नाम क्या है?
५. बीसवीं शताब्दी का वह कौन सम्राट् है जिसने सार्वजनिक घोषणा की कि उसे किसी दैवी शक्ति का वरदान नहीं है?
६. किन परिस्थितियों में उसे ऐसा कहना पड़ा?

ब्रह्मा

सृष्टि के आरंभ से पहले विष्णु से ब्रह्मा का आविर्भाव हुआ । उनके पास सृष्टि रचने की पूरी क्षमता थी । उन्हीं के साथ प्रकाश आया और उन्हीं के साथ आदि नाद 'ॐ' की ध्वनि हुई ।

ब्रह्मा ने कई ऋषि-मुनियों और शक्तिशाली व्यक्तियों की रचना की जिन्हें 'प्रजापति' नाम से पुकारा गया । उनके दस प्रजापति बहुत विख्यात हैं । वे हैं: मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, वसिष्ठ, भृगु, दक्ष तथा नारद । इस पृथ्वी पर विचरने वाले सभी जीव इन्हीं प्रजापतियों की संतान हैं ।

सभी का रचयिता होने के कारण ब्रह्मा को सबसे बराबर स्नेह था । राक्षस इस स्थिति का नाजायज़ लाभ उठाते थे । उन्होंने उनसे कई प्रकार के वरदान् माँगे ।

ब्रह्मा ने ही व्यास को प्रेरित किया कि वह वेदों का प्रणयन करें और उन्होंने ही वाल्मीकि को पहले काव्य की रचना करने की प्रेरणा दी ।

ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती, ज्ञान की देवी मानी जाती है ।

चन्दामामा की खबरें

एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाला सबसे कम उम्र पर्वतारोही

दुनिया की सब से ऊँची चोटी, एवरेस्ट पर चढ़नेवाला सब से कम उम्र का पर्वतारोही फ्रांस का सत्रह-वर्षीय युवक बेतरां रोश है। उसके साथ उसका एक-टांग वाला साथी वेस ले बिसियोने भी था, पर वह चोटी पर पहुँचते-पहुँचते रह गया।

बराबर बढ़ता कबाड़ और मलबा

आदमी ने नदियाँ और समुद्र, सभी प्रदूषित कर दिये हैं और यहाँ-वहाँ कबाड़ ही कबाड़ बिखर दिया है। लेकिन अब तो यह कबाड़ अंतरिक्ष में भी पहुँच गया है और लाखों की तादाद में कबाड़ के ये टुकड़े पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे हैं। कुछ कबाड़ तो बेकार प्रक्षेपास्त्रों के मलबे की शक्ल में है।

खैर, कबाड़ के ये टुकड़े नये अंतरिक्षयानों से टकरा भी सकते हैं। तब जो तबाही होगी, वह भयंकर होगी।

आओ, साहित्य की दुनिया में चलें ।

१. वह कौन अंगरेज़ पत्रकार था जिसने भारत के सैनिक विद्रोह का आँखों देखा विवरण दिया था?

२. वह किस पत्र की ओर से था?

३. वाल्तेयर के प्रसिद्ध व्यंग्यात्मक उपन्यास का नाम क्या है?

४. वह कौन नाटककार है जिसने २,२०० नाटक लिखे?

५. वह कौन-सी लिपि थी जिसे में बौद्ध ग्रंथ लिखे गये?

उत्तर

क्या तुम जानते हो?

१. डॉ. क्रिस्चयन बर्नार्ड

२. लुई वाशकांस्की

३. टाइबेरियस

४. द मैंड्रिल

५. जापान के सम्राट् हिरो हिटो

६. दूसरे विश्व युद्ध में जापान की हार

साहित्य

१. विलियम हवार्ड रसल

२. द टाइम्स, लंदन

३. कांदीद

४. स्पेन का लोपे दे वेगा (१५६२-१६३५)

५. पाली

आओ, साहित्य की दुनिया में चलें।

१. वह कौन अंगरेज़ पत्रकार था जिसने भारत के सैनिक विद्रोह का आँखों देखा विवरण दिया था?

२. वह किस पत्र की ओर से था?

३. वाल्तेयर के प्रसिद्ध व्यंग्यात्मक उपन्यास का नाम क्या है?

४. वह कौन नाटककार है जिसने २,२०० नाटक लिखे?

५. वह कौन-सी लिपि थी जिसे में बौद्ध ग्रंथ लिखे गये?

उत्तर

क्या तुम जानते हो?

१. डॉ. क्रिस्चयन बर्नार्ड

२. लुई वाशकांस्की

३. टाइबेरियस

४. द मैंड्रिल

५. जापान के सम्राट् हिरो हिटो

६. दूसरे विश्व युद्ध में जापान की हार

साहित्य

१. विलियम हवार्ड रसल

२. द टाइम्स, लंदन

३. कांदीद

४. स्पेन का लोपे दे वेगा (१५६२-१६३५)

५. पाली

संसार की पौराणिक कथाएं–१

ड्रैगन के दांत

टॉयर के राजकुमार कैडमस ने एक बार एक दिव्यवाणी सुनी कि यदि वह कुछ विशेष चिन्हों के साथ कोई गाय देखे तो उसके पीछे-पीछे चल दे और वह गाय जहाँ लेटे, वहीं एक नगर बसा दे ।
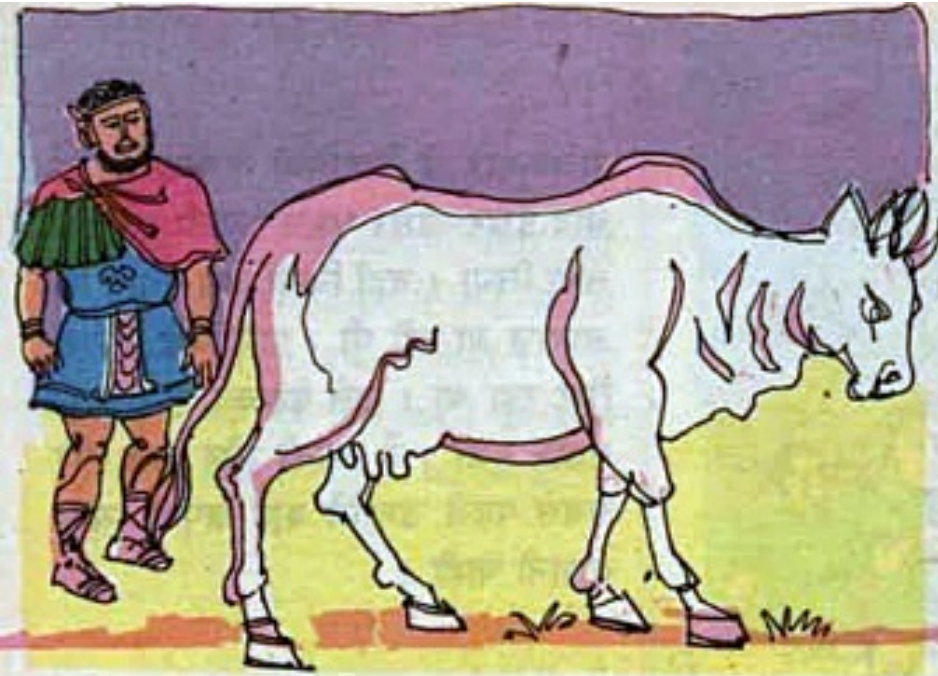
ऐसी एक गाय कैडमस को दिखाई दी और वह उसके पीछे-पीछे चल दिया । गाय बस्ती से बहुत दूर बियाबान की ओर चली जा रही थी । फिर वह एक जगह पर लेट गयी । राजकुमार कैडमस ने उस जगह का नक्शा तैयार किया और वहाँ से लौट आया । वह जानता था कि जिस खास जगह पर गाय लेटी है, वह नये बसने वाले नगर का केंद्र बिंदु होगी ।

राजकुमार अपने आदमियों के साथ फिर वहाँ पहुँचा । नगर बसाने से पहले उसे यह तय कर लेना था कि वहाँ, आस-पास, पानी पर्याप्त मात्रा में तो है । इसलिए उसने उन आदमियों को यह पता लगाने का आदेश दिया कि जाओ और आस-पास जल स्रोतों को ढूंढ़ो ।

राजकुमार के आदमियों ने कुछ ही देर बाद इधर-उधर घूमकर पानी का पता लगा लिया। वहाँ किसी जल प्रपात की आवाज़ आ रही थी। पानी बड़े ज़ोर से गिर रहा था। उसे देखकर उन्हें बड़ा संतोष हुआ। वे उसकी ओर भागे और सबसे पहले उन्होंने वहाँ अपनी प्यास बुझानी चाही।

वे पानी पीने को ही थे कि प्रपात के पीछे से एक भयानक आकृति वाला राक्षस-सा दिखने वाला जीव प्रकट हुआ, और उसने एक ही झपट्टे में कुछ आदमियों को अपनी पकड़ में ले लिया। आखिर, उस जीव ने उन्हें मार डाला। मरते समय वे आदमी बहुत चीखे-चिल्लाये और उनकी वे चीखें कैडमस तक भी पहुँच गयीं।
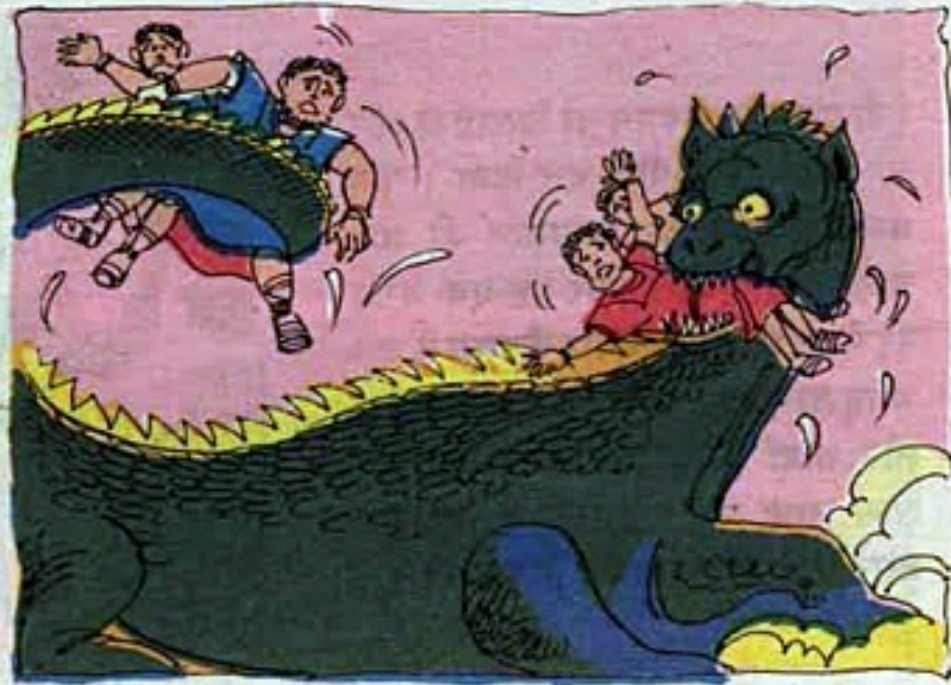
कैडमस तुरंत वहाँ पहुँचा और अपने आदमियों की ऐसी गत देखकर हैरान रह गया। उसने देवी अथीन की वंदना की और उसका आशीर्वाद पाकर वह उस जीव, यानी ड्रैगन पर टूट पड़ा। बड़ी बहादुरी से उसने उससे युद्ध किया और उसे मार गिराया।

ड्रैगन के दांत इधर-उधर बिखर गये थे। राजकुमार कैडमस ने उन्हें बटोरा और एक जगह दफना दिया। देवी अथीन ने ही उसे ऐसा करने को कहा था। दांत बिखरे रहते तो बहुत नुकसान पहुँचाते।
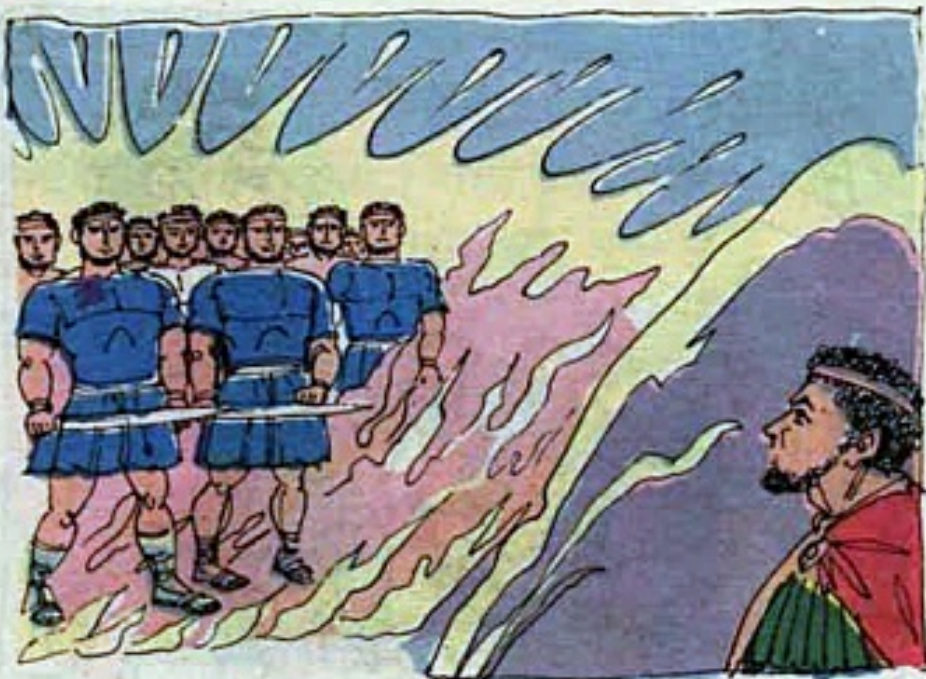
अचानक, जहाँ ड्रैगन के दांत दफनाये गये थे, वहाँ से सेना की एक पूरी टुकड़ी उगकर खड़ी हो गयी। सेना बड़ी हिंस्र दिखती थी। लगता था वह रोके नहीं रुकेगी। राजकुमार स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए एक चट्टान के पीछे जा छिपा।

चट्टान के पीछे छिपे-छिपे ही राजकुमार ने एक बहुत बड़ा पत्थर उठाया और सैनिकों के बीच फेंक दिया। सैनिकों को यह बिलकुल पता नहीं चला कि पत्थर किसने फेंका है। वे आपस में ही एक-दूसरे पर आरोप लगाने लगे।

होते-होते सैनिक आपस में झगड़ने लगे और झगड़ते-झगड़ते लड़ाई पर उतारू हो गये। फिर उस लड़ाई ने भयंकर युद्ध का रूप ले लिया। चारों-तरफ अस्त्र-शस्त्र चल रहे थे और सैनिक एक-दूसरे के वार से मर-मर कर नीचे गिरते जा रहे थे।

आखिर जब पांच ही सैनिक बचे तो युद्ध बंद हुआ। कैडमस ने जब देखा कि खतरा टल गया है तो वह उन सैनिकों के बीच जा पहुँचा, और उन सैनिकों ने सहज ही उसे अपना नायक मान लिया। कैडमस को तो केवल वहाँ एक नगर ही बसाना था। इसलिए उसने उन्हें भी नगर-निर्माण के काम में जोत दिया। वे भी खुशी-खुशी उस काम को पूरा करने में लग गये।

इस तरह यूनान (ग्रीस) में थेब्स नगर का निर्माण हुआ। थेब्स नगर के राज-परिवारों के पूर्वज और संस्थापक वे पांच योद्धा ही थे। कुछ शताब्दियों बाद सिंकदर महान् ने इस नगर को तहस-नहस कर दिया। इसे अब थिवाइ के नाम से जाना जाने लगा।

अशर्फी का कमाल

सियाराम महाकंजूस था । एक दिन पड़ोसी गाँव से जंगल के रास्ते अपने गाँव को लौट रहा था । रास्ते में एक पेड़ के नीचे उसे खांसता-कराहता एक बूढ़ा दीख पड़ा । बूढ़े ने कहा, "श्रीमान, प्यास से मैं मरा जा रहा हूँ । मुझ पर दया कीजिए और थोड़ा-सा पानी पिलाकर मुझे बचाइए ।"

बूढ़े की बात सुनकर सियाराम रुक तो गया, पर उससे बोला, "सुनो, पानी तो मेरे पास है, पर मैं पिलाऊँगा तभी जब तुम मुझे उसके बदले में ज़्यादा से ज़्यादा रकम दोगे । बोलो, क्या तुम्हें मंजूर है?"

बूढ़ा पल भर के लिए तो सोच में पड़ गया, पर तुरंत बाद ही उसने चांदी का एक सिक्का निकाला और उसे सियाराम के हवाले कर दिया । सियाराम ने सिक्का अपने कब्जे में कर लिया और बदले में उसने पानी पिलाकर बूढ़े की प्यास बुझायी ।

पानी पी लेने के बाद बूढ़ा बोला, "श्रीमान, अब मेरी जान में जान आयी है । मैं भी आपके गाँव चलता हूँ । वहाँ मैं आपको सैकड़ों-हज़ारों अशर्फियाँ दिला सकूंगा!"

"अरे, तुम दिखते तो कंगाल हो और बात करते हो सैकड़ों-हज़ारों अशर्फियों की!" सियाराम उससे हुज्जत करता हुआ बोला, "गनीमत समझो कि तुम्हारी जान बच गयी, वरना... । थोड़े से पानी के बदले में मुझे चांदी का सिक्का देने वाला मूर्ख हो, तुम्हारे जैसे व्यक्ति से मैं क्या कोई उम्मीद कर सकता हूँ? जाओ, अपना रास्ता नापो ।"

किंतु सियाराम की इस हुज्जत से बूढ़ा परेशान नहीं हुआ । वह बोला, "आप मेरी बुद्धि को ऐसी-वैसी मत समझिए । कल मैं आपके घर के सामने खड़ा होकर आपसे दान माँगूंगा । आप दान में मुझे एक अशर्फी दीजिएगा 'और फिर देखिएगा कमाल!

सरिता महाजन

मैं आप को मालामाल कर दूँगा!"

"एक अशर्फी! न, न, मैं तुम्हें एक फूटी कौड़ी भी नहीं दूंगा ।"

"अरे आप क्यों नाहक घबरा रहे हैं!" बूढ़े का तर्क भी जारी था, "मेरी बात पहले ध्यान से सुनिए । आप मुझे एक अशर्फी दान में देंगे तो आपके पड़ोसी और दूसरे लोग यही समझेंगे कि मुझ में ज़रूर कोई बात है जो आप जैसा व्यक्ति मुझे दान दे रहा है । इस लिए वे भी मुझे दान में अशर्फियाँ देने लगेंगे । फिर मैं उनसे कहूंगा कि इस दान का फल तभी मिलेगा जब वे मुझे रोज़ लगातार एक महीने तक दान देते रहेंगे । मेरे पास अशर्फियाँ इकट्ठी हो जायेंगी, मैं आप को रोजाना एक हज़ार अशर्फियाँ देनी शुरू कर दूँगा ।"

"हज़ार अशर्फियाँ हर रोज!" सियाराम ने विस्मय से अपना मुँह खोला, "बात तो तुम पते की कह रहे हो । पर यदि तुमने धोखा दिया तो?" उसके चेहरे पर संदेह था ।

"इतना संदेह है मुझ पर तो अभी मुझ से एक अशर्फी ले लीजिए और कल मुझे यही अशर्फी दान-स्वरूप लौटा दीजिएगा ।" बूढ़े ने एक अशर्फी सियाराम के हाथ पर रख दी । सियाराम ने मान लिया ।

अब बूढ़ा सियाराम के साथ उसके गाँव की ओर चल पड़ा । दूसरे दिन वही सब कुछ हुआ, जो तय किया गया था । गाँव में यह खबर हवा की तरह फैल गयी कि उनके यहाँ एक बूढ़ा आया है जो बहुत ही पहुंचा हुआ है और सियाराम ने उसे एक अशर्फी दान में दी है । लोग हैरान थे । क्या सियाराम भी किसी को कुछ भेंट-स्वरूप दे सकता है? ज़रूर बूढ़ा अद्भुत चमत्कार वाला होगा, वरना सियाराम जैसा कंजूस किसी को कुछ देने वाला है? अब हर किसी के मन में बूढ़े से वरदान पाने की इच्छा लगी । धनी व्यापारी ही नहीं, आम लोग भी बूढ़े के पास जाने लगे । वे उसके निकट जाते, उसके सामने भेंट-स्वरूप एक अशर्फी रख देते और अपना माथा नवाकर वहां से लौट पड़ते । इस तरह पहले दिन ही बूढ़े ने ढेर-सारी अशर्फियाँ इकट्ठी कर लीं और उनमें से काफी सियाराम के हवाले कर दीं । सियाराम को अशर्फियाँ देते समय उसने केवल इतना ही कहा, "कल भी आप मुझे ऐसे ही एक अशर्फी भेंट में देंगे ।"

पर सियाराम की संदेह करने की आदत गयी नहीं थी । बोला, "मान लिया ये अशर्फीयाँ तो मेरी हैं । पर कल अगर तुम मेरी एक अशर्फी लेकर ग़ायब हो गये तो?"

बूढ़े ने चुपचाप सियाराम के हाथ पर एक अशर्फी पेशगी में रख दी और उसके यहाँ से चला आया ।

दो हफ्ते मुश्किल से गुज़रे होंगे कि सियाराम से बूढ़े के पास ढेरों अशर्फियाँ बच गयीं । उस रकम से बूढ़े ने एक बढ़िया सा मकान ख़रीदा और खाना बनाने तथा अपनी देख-रेख के लिए दो नौकर रख लिये । उसके पास क्योंकि भारी रकम बची हुई थी, इस लिए उसने बाकी रकम ब्याज पर दे दी । उसकी ज़िंदगी मज़े से कटने लगी । लेकिन बूढ़े ने सियाराम से हर रोज़ एक अशर्फी भेंट में लेना नहीं छोड़ा ।

उधर जो लोग बूढ़े को हर रोज़ भेंट चढ़ा रहे थे, उनके मन में कुछ संदेह जाग उठा । एक व्यक्ति ने बूढ़े की दिनचर्या पर आँख रखनी शुरू कर दी । इस तरह दो दिनों में ही हकीकत सामने आ गयी । लोगों ने बूढ़े और सियाराम को धर दबोचा और उन्हें न्यायाधीश के सामने पेश किया ।

बूढ़ा न्यायाधीश के समक्ष ज़रा भी नहीं घबराया । बोला, "महोदय, इसमें सियाराम ने कोई धोखा नहीं दिया । उसने मुझ पर विश्वास किया और मुझे भेंट में एक अशर्फी देता रहा । बाकी लोगों को जिन्होंने मुझे भेंट स्वरूप अशर्फियाँ दीं, मैं ने किसी प्रकार का आश्वासन नहीं दिया । वे स्वयं ही मेरे पास आते रहे और भेंट चढ़ाते रहे । भेंट स्वीकार करना कोई अपराध नहीं । दूसरे, इस गाँव में किसी भी परिवार से मेरे पंद्रह से ज़्यादा अशर्फियाँ नहीं आयी हैं । हाँ, सियाराम से मैंने काफी फायदा उठाया है जिसके बदले में मैं उसे ज़्यादा से ज़्यादा अशर्फियाँ हर रोज़ देता रहा हूँ ।"

लेकिन न्याय चाहने वाले इस विवरण से संतुष्ट नहीं थे । वे बोले, "यह केवल मनघड़ंत कहानी है और हमें लूटने की साज़िश है । यदि इन्हें छोड़ दिया गया तो ये दूसरे लोगों को भी धोखा देते रहेंगे । इसलिए इन्हें सज़ा मिलनी ही चाहिए ।"

तब बूढ़े ने हाथ जोड़कर न्यायाधीश से

प्रार्थना की, "महोदय, मैं पच्चीस वर्ष का था जब से यह योजना मेरे मन में चल रही थी। मैं गाँव-गाँव घूमा, शहर-शहर घूमा, लेकिन मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो मेरी इस योजना को कार्य-रूप देने में सहायक होता। अब कहीं बुढ़ापे में मुझे इस योजना को सफल करने का अवसार मिल पाया।"

"हम तुम पर विश्वास कैसे करें? क्या तुम्हें अपनी-योजना को सफल करने के लिए यही गाँव मिल पाया? दूसरी जगहों पर तुम असफल क्यों रहे?" न्यायाधीश ने पूछा।

"इसका एक कारण है। दूसरी जगहों पर लोग सियाराम जैसे व्यक्ति का अनादर करते थे। वे उसका अनुसरण कभी न करते। इसलिए अपनी योजना को अमल में लाने का मुझे कभी मौका नहीं मिला। यहाँ बात दूसरी थी। यहाँ अनेक लोग उसके रास्ते पर चलना चाहते थे। और उससे लाभ उठाना चाहते थे। इसलिए जो कामयावी मुझे यहाँ मिली, और कहीं नहीं मिल सकती थी। दूसरे शब्दों में, यह गाँव अपनी तरह का अनूठा गाँव है।" बूढ़े ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।

निस्संदेह, बूढ़े का इशारा उस गाँव के लोगों की मनोवृत्ति की ओर था। वे केवल अपना स्वार्थ साधना चाहते थे, और इसलिए जो भी उसे भेंट-स्वरूप देते थे, स्वार्थ-सिद्धि के लिए देते थे।

बूढ़े की बात न्यायाधीश से न्याय चाहने वालों की समझ में भी आ गयी। वे मारे शर्म के पानी-पानी हो रहे थे।

उधर न्यायाधीश भी असलियत समझ गया था। उसने जान लिया कि इस घोटाले के पीछे लोगों की स्वार्थ-सिद्धि ही है, बूढ़े की छालबाज़ी नहीं। इसलिए निर्णय बूढ़े और सियाराम के पक्ष में हुआ।

इस घटना ने सियाराम को भी झकझोर दिया। उसे जैसे कि किसी ने आइने में उसका असली चेहरा दिखा दिया हो। उसमें एकदम परिवर्तन आ गया। वह अब कंजूस नहीं रहा था—वह सच्चा दानी और समाज सेवी बन गया था।

राम का आदेश पाकर लक्ष्मण किष्किंधा के लिए निकल पड़ा। उसके कंधे पर धनुष था। वह मन ही मन सोच रहा था कि वह सुग्रीव से क्या कहेगा और सुग्रीव क्या उत्तर देगा, और फिर वह उसे पलटकर क्या उत्तर देगा। ऐसे ही उत्तर-प्रत्युत्तर उसके मन में चल रहे थे। वह भीतर ही भीतर काफी भुन रहा था।

लक्ष्मण को दूर से आते देखकर वानरों को लगा कि कोई शत्रु आ रहा है। इसलिए वे पेड़-पत्थर इकट्ठे करके युद्ध के लिए तैयार हो गये। इससे लक्ष्मण का क्रोध और भी भड़क उठा। उसका क्रोध उसके चेहरे पर स्पष्ट झलक आया था। इसलिए जब वह वानरों के निकट पहुँचा तो वानर उसे देखकर घबरा गये और सुग्रीव को इसकी खबर देने के लिए फुर्ती से उसके महल की ओर बढ़े। लेकिन सुग्रीव तो अपनी पत्नी के साथ विनोद-क्रीड़ा में लीन था। इसलिए उसने वानरों की बात पर कोई ग़ौर नहीं किया।

इस पर अंगद डरा-सहमा सा लक्ष्मण के सामने आया। अंगद को अपने सामने पाकर लक्ष्मण उससे बोला, "हे बालक, सुग्रीव को सूचना कर दो कि लक्ष्मण उससे मिलने आया है। उसे यह भी बता दो कि मेरे बड़े भाई राम उसके व्यवहार से बहुत दुःखी हैं। हाँ, और उसे यह भी बता देना कि उसे मेरे

सामने आने में देर नहीं करनी होगी।"

अंगद तुरंत सुग्रीव के पास गया और उससे बोला कि लक्ष्मण उससे मिलने आया हुआ है और वह बड़े क्रोध में दिख रहा है।

सुग्रीव को हैरानी हुई। उसने अपने मंत्रियों को बुलाया और उनसे बोला, "मैंने तो ऐसी कोई बात नहीं की और न ही कोई ऐसा शब्द बोला जिससे लक्ष्मण को मुझ पर गुस्सा आये। तब इस गुस्से का कारण क्या हो सकता है? हो सकता है मेरे किन्हीं शत्रुओं ने उसे उल्टी-सीधी पट्टी पढ़ा दी हो! खैर, मुझे किसी के क्रोध की चिंता नहीं, न ही मैं इससे भयभीत हूँ। मुझे तो केवल अपनी मित्रता का लिहाज़ है। राम ने मुझ पर उपकार किया। मैं उनका ऋणी हूँ। मैं वह ऋण उतारना चाहता हूँ। इसी बात से मैं थोड़ा चिंतित भी हूँ।"

मंत्रियों में हनुमान भी था। वह बड़ा बुद्धिमान था। वह सुग्रीव से बोला, "राजन्, राम का उपकार आप नहीं भूले, यह कोई छोटी बात नहीं। पर आप प्रमोद में पड़कर समय पर अपना कर्तव्य निभाने से चूक गये। अब शरद ऋतु आ गयी है। युद्ध के लिए यही उत्तम समय है। इसीलिए लक्ष्मण आया होगा। राम तो दुःखी हैं ही। उनकी पत्नी का हरण हुआ है। इसलिए उनके मुँह से कोई कटु शब्द निकले तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं। और भाई के दुःख से दुःखी होकर लक्ष्मण यदि क्रोधित हो उठा हो, तो इसमें भी कोई हैरानी की बात नहीं। आप थोड़ा अपने कर्तव्य से चूक गये थे। अब आप लक्ष्मण को शांत कीजिए। आप उसका सत्कार करें, वह स्वयं ही शांत हो जायेगा। इसके सिवा और कोई चारा नहीं। एक मंत्री के नाते यही मैं आपको सलाह दे सकता हूँ। जाइए, अपने पुत्र और बंधु-बांधवों के साथ उसका सत्कार कीजिए।"

अंगद गया और लक्ष्मण को अपने साथ लिवा लाया। लक्ष्मण तमाम रास्ते किष्किंधा के वानर-प्रमुखों के घर देखता

रहा और अंगद के पीछे-पीछे चलता रहा । सुग्रीव के महल पर पहुँचकर वह कुछ देर अचंभित हो खड़ा रहा । वह महल इंद्र के महल से कुछ कम नहीं था । अंत:पुर से वीणा के स्वर सुनाई दे रहे थे । चारों तरफ अनन्य सुंदरियाँ खड़ी दिखाई दे रही थीं । स्पष्ट था कि सुग्रीव भोग-विलास का जीवन जी रहा था । यह सब देखकर लक्ष्मण का क्रोध फिर भड़क उठा । उसने अपना धनुष अपने कंधे पर से उतारा और उसकी प्रत्यंचा खींचकर भयानक आवाज़ की ।

यह आवाज़ सुनते ही सुग्रीव जान गया कि लक्ष्मण उसके महल के भीतर आ पहुँचा है । इतना ही नहीं, वह मारे डर के थर-थर कांपने लगा । उसका गला बिलकुल सूख गया था । अपनी उसी अवस्था में वह तारा से बोला, "तारा, यह लक्ष्मण तो बड़ा ही दयालु था । तब वह इस कद्र क्रोधित क्यों है? जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, मैंने तो कभी इसका कुछ नहीं बिगाड़ा । चलो, तुम मेरे आगे-आगे चलो और उसे शांत करने की कोशिश करो ।"

तारा लक्ष्मण के निकट गयी और उससे बोली, "हे लक्ष्मण! अपने मित्र के प्रति इस तरह क्रोध से मर जाना तुम्हें सुहाता नहीं! वह हर प्रकार से तुम्हारी मदद करने को तैयार है । थोड़ा विलंब जरूर हो गया । तुम तो महान् हो । तब सुग्रीव जैसे एक सामान्य व्यक्ति पर इतना क्रोध क्यों? तुम्हें सुग्रीव को क्षमा कर देना चाहिए ।"

और इन शब्दों के साथ तारा लक्ष्मण को अंत:पुर के भीतर ले गयी । वहाँ सुग्रीव सोने के आभूषणों और फूलों की मालाओं से लदा सोने के सिंहासन पर बैठा था और उसकी सेवा में अप्सरा-सी अनेक स्त्रियाँ थीं । इस दृश्य ने तो लक्ष्मण को जैसे कि झकझोर दिया । उसका क्रोध शांत होने के बजाय विकराल रूप लेने लगा ।

लक्ष्मण को देखते ही सुग्रीव सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और नत-मस्तक हो लक्ष्मण

से कुछ कहने को हुआ । इतने में लक्ष्मण बोला, "राम से तुम्हारा काम निकल गया तो तुम उसे भूल बैठे! क्या तुम्हें उनकी मदद नहीं करनी चाहिए थी? तुम पूरी तरह से कृतघ्न और मिथ्याचारी हो! तुमने सीता की खोज अब तक क्यों नहीं करवायी? यदि राम को पहले पता होता कि तुम ऐसी कृतघ्नता दिखाओगे तो वह तुम्हारी कभी मदद न करते, और न ही तुम्हें वानर राजा बनाते! खैर, कोई बात नहीं! मैं अभी तुम्हें अपने बाणों के सहारे तुम्हारे भाई बालि के पास भिजवाये देता हूँ!"

इस बार फिर तारा को ही बीच-बचाव करना पड़ा । बोली, "हे लक्ष्मण! सुग्रीव कृतघ्न कतई नहीं । उसमें किसी प्रकार की दुष्टता भी नहीं । वह तो अकारण ही इतने कष्ट भोगता रहा । अभी कहीं उसे थोड़ा-सा सुख मिला है । क्या तुम उसकी इस छोटी-सी चूक के लिए उसे क्षमा नहीं कर दोगे? राम के लिए सुग्रीव अपना सब कुछ छोड़ सकता है, रुमा को और मुझे भी । सीता को वह अवश्य ढूंढ़ेगा, चाहे इसके लिए रावण से युद्ध ही क्यों न करना पड़े । इसी काम को पूरा करने के लिए उसने सब वानरों को बुला भेजा है । उन्हें अब तक आ ही जाना चाहिए था । तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो और गुस्सा परे फेंक दो ।"

तारा की बातों से लक्ष्मण थोड़ा शांत हुआ । इस से सुग्रीव को भी थोड़ी राहत महसूस हुई । वह लक्ष्मण से बोला, "लक्ष्मण, इतने से विलंब से तुम इतने क्रोधित हो जाओगे, मुझे पता न था । अब मुझे क्षमा कर दो । गलती हर किसी से हो जाती है!"

सुग्रीव की बात सुनकर लक्ष्मण का गुस्सा एकदम जाता रहा । बड़े स्नेह से सुग्रीव की ओर देखते हुए बोला, "रावण से युद्ध करने के लिए तुम हमारे साथ रहो तो हमें और क्या चाहिए! तुम अभी मेरे साथ चलो और राम को स्वयं सांत्वना दो ।"

इस पर सुग्रीव ने हनुमान् की ओर देखा और बोला, "वानर जहाँ-जहाँ भी रहते हैं, उन्हें बुला भेजने के लिए हर कहीं दूत भेजो। मैंने इससे पहले जिन दूतों को भेजा था, उन्हें और सतर्क कर दो। यदि कोई आलस दिखाये तो उसे मेरे पास भेज दो। और हाँ, यह घोषणा स्पष्ट हो जानी चाहिए कि यदि ये वानर दस दिन के भीतर यहाँ नहीं पहुँचें तो इन्हें मृत्यु दण्ड दिया जायेगा!"

हनुमान् ने सुग्रीव के आदेशानुसार किष्किंधा में रह रहे सभी वानरों को चारों ओर भिजवा दिया। फिर सुग्रीव ने सोने की एक पालकी मंगवा ली और उसमें लक्ष्मण के साथ स्वयं भी बैठ गया। दूसरी पालकियों में उसके परिवार के अन्य लोग बैठे थे। बड़ा वैभव था।

राम के निकट पहुँचकर वे सब पालकियों से उतर गये और उनके सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये। फिर सुग्रीव ने राम के समक्ष साष्टांग प्रणाम किया। इस पर राम ने उसे गले से लगा लिया और स्नेह से उसे अपने पास बैठाया। फिर उसे याद दिलाया कि युद्ध का समय आ गया है।

सुग्रीव का उत्तर दो-टूक था। बोला, "हे राम, वीर और प्रतापी लाखों वानर आपकी सहायता के लिए चले आ रहे हैं। रावण का अंत अब निकट है। वे सीता को लौटा लाने में अवश्य सहायक होंगे।"

राम ने जब सुना कि सुग्रीव पहले से ही काफी तैयारियाँ कर चुका है तो उन्हें खुशी

हुई । "सुग्रीव अब हमारी विजय में कोई संदेह नहीं!"

उसी समय आकाश में धूल उड़ती दीख पड़ी । वानर बड़े-बड़े झुंडों में चले आ रहे थे । उनमें से कुछ तो बहुत दूर से आये थे । कुछ सफेद थे, कुछ लाल थे और कुछ भूरे थे । वे पहाड़ों और समुद्री इलाकों, सब जगह से आये थे । उन में शतवली नाम का वानर-श्रेष्ठ भी था जिसके साथ अनेक वानर थे । सोने के वर्ण वाला, तारा का पिता, महावीर सुषेण भी था जिसके साथ हजारों की तादाद में अन्य वानर थे । रुमा का पिता तार भी था और उधर हनुमान् का पिता केसरी था जिसके साथ बाईस हज़ार वानर थे । गवाक्ष और धूम्र भी थे और काले वानरों की सेना के साथ नील भी था । गवय के साथ भी लाखों की संख्या में उसकी वानर-सेना थी । दरीमुख, मैंद, द्विविद और गज, सभी थे जिनके साथ उनकी सेना भी थी । जांबवान् के साथ भी भारी संख्या में उसके वानर सैनिक थे । गंधमादन और अंगद के साथ भी कोई कम संख्या नहीं थी । इस प्रकार तमाम दुनिया के वानर किष्किंधा चले आये थे । चारों तरफ आवाजें ही आवाजें थीं जिससे धरती-आकाश गुंजायमान हो उठे थे ।

वानर प्रमुख सुग्रीव के निकट आये और भक्ति-भाव से उन्होंने उसका अभिवादन किया । सुग्रीव ने उन्हें राम को सौंपना चाहा । बोला, "तुम लोग अपनी-अपनी

सेनाओं को वनों और नदी तटों पर ठहराओ और उनकी हर ज़रूरत का ख्याल करते हुए उन्हें तैयार-बर-तैयार रखो ।"

फिर वह राम से बोला, "आप के आदेश पर आगे बढ़ने के लिए लाखों-करोड़ों की संख्या में वानर चले आये हैं । उन में अनेक पराक्रमी और प्रतापी वीर हैं । उन्हें आप अपनी इच्छा के अनुसार आदेश दें । इन वानरों को युद्ध में कैसे उतारना है, यह मैं जानता हूँ । फिर भी आप ही आदेश देंगे तो ठीक रहेगा ।"

राम अब बहुत प्रसन्न थे । संतोष उनके चेहरे पर व्याप रहा था । उन्होंने उसी आवेग में सुग्रीव को गले लगा लिया और बोले, "सुग्रीव, पहले पता लगाना होगा कि सीता ज़िंदा तो है! और यह भी पता लगाना होगा कि रावण कहाँ है! आगे की कार्रवाई तभी तय हो पायेगी! इसलिए जैसे-जैसे मैं कहूँ, वैसे-वैसे तुम वानरों को आदेश देते रहो । यही मेरी इच्छा है!"

सुग्रीव ने विनत और पर्वताकार नाम के दो वानर-प्रमुखों को बुलाकर कहा कि वे अपनी सेना के साथ पूर्व दिशा में जायें और रावण के निवास तथा सीता की स्थिति का पता लगाकर सूचित करें । उसने यह भी कहा कि यह काम एक मास के भीतर पूरा हो जाना चाहिए ।

इसी प्रकार दक्षिण की ओर भी कुछ वानरों को भेजा गया । उन में नील, हनुमान, जांबवान्, सुहोत्र, शरारी, शरगुल्म, गज, गवाक्ष, गवय, ऋषभ, मैंद, द्विविद, विजय, गंधमादन, उल्कामुख, अनंग प्रमुख थे । उनके साथ उनकी विशाल सेना भी थी ।

इसके बाद सुग्रीव ने पश्चिम दिशा में तारा के पिता सुषेण को भेजा और उत्तर दिशा में शतवली को भेजा । उनके साथ भी भारी वानर सेना थी ।
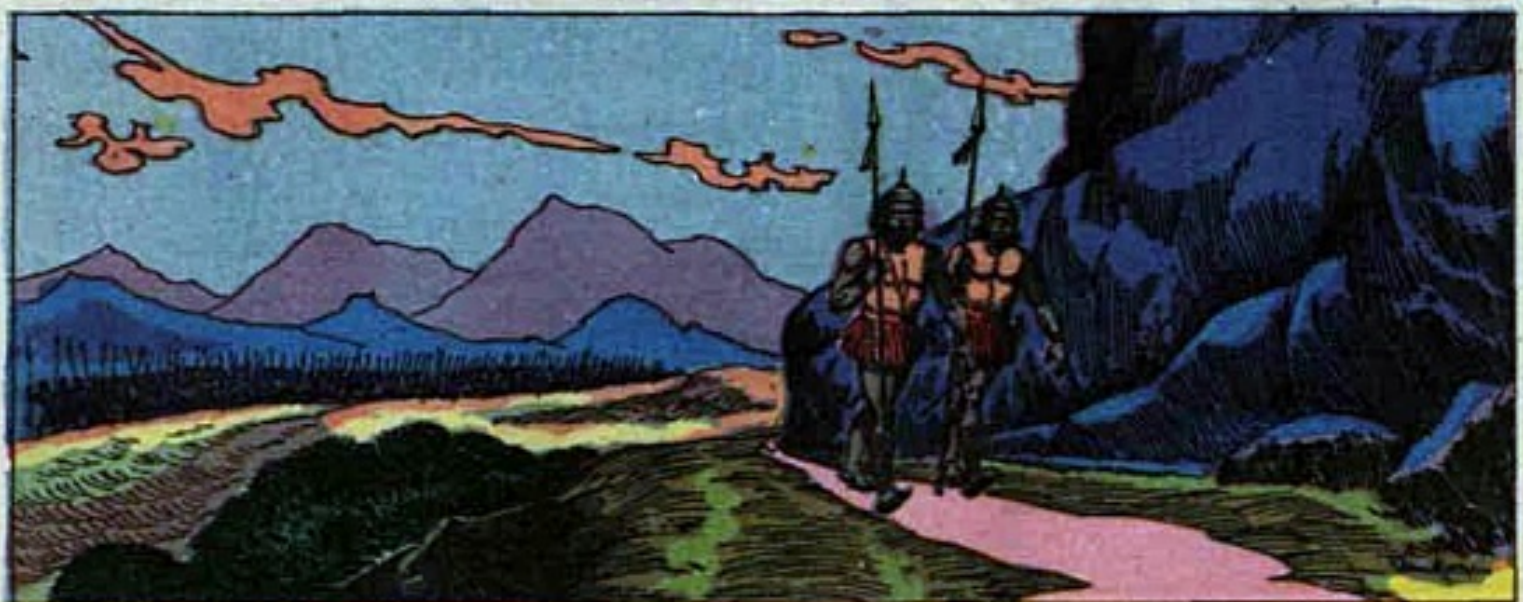
दिसंबरी फूल

बात पुरानी है । रूस के एक गाँव में एक अमीर रहता था । उसकी बेटी का नाम सोनिया था । सोनिया की माँ नहीं थी । वह काफी पहले चल बसी थी । सोनिया के पिता, यानी उस अमीर ने दूसरी शादी कर ली थी । दूसरी शादी से भी उसके एक बेटी हुई जिसे उसने नटाशा नाम दिया ।

नटाशा जब बड़ी हुई तो उसकी माँ को अपनी सौतेली बेटी सोनिया से जलन होने लगी । नटाशा भी अपनी माँ की तरह अपनी सौतेली बहन से खुश न थी, दोनों माँ बेटी सोनिया को बात-बात पर ताने देतीं ।

सोनिया सुंदर थी । स्वभाव की भी अच्छी थी । अपनी सौतेली माँ की हर बात सर माथे पर लेती और उसे हंसते-हंसते पूरा करती । वह घर का भी पूरा काम संभालती । इसपर भी उसकी सैतेली माँ उसे किसी न किसी प्रकार से तकलीफ पहुँचाने की कोशिश करती । बाप बेचारा लाचार-सा यह देखता रहता और कुछ न बोल पाता ।

सोनिया पर जब माँ-बेटी के तानों का कोई असर न हुआ तो उन्होंने उसे घर से बाहर करने की योजना बनायी ।

दिसंबर का महीना था । कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी । रूस में सर्दी वैसे भी भयंकर होती है । समूची धरती बर्फ से ढक जाती है और उसके नीचे पेड़-पौधे दब जाते हैं ।

उन्हीं दिनों सोनिया को उसकी सौतेली माँ ने बुला भेजा और उससे बड़े प्यार से बोली, "बेटी, पहाड़ों पर उगने वाले फूल लाभकारी होते हैं । उन में बड़े गुण होते हैं । तुम्हें चाहे कितनी भी दिक्कतें उठानी पड़े तुम वे फूल चुनकर ले आओ । तुम्हें इस काम में देर नहीं करनी चाहिए । फौरन निकलो!"

सोनिया को जैसे ही आदेश मिला, वैसे ही वह पहड़ों से फूल चुनकर लाने के लिए अपने

रूसी लोक कथा

घर से निकल पड़ी ।

घर से निकलकर सोनिया सीधे जंगलों की ओर चल दी । जंगलों में वह काफी भटकती रही । आखिर वह एक पहाड़ी इलाके में पहुंची । वहाँ चारों ओर बर्फ ही बर्फ फैली हुई थी । कहीं कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था । फिर उसे दूर बहुत थोड़ा प्रकाश-सा दीख पड़ा । वह उसी दिशा में चल दी ।

वह जैसे-जैसे उस प्रकाश के निकट होती गयी, वैसे-वैसे वह प्रकाश और-और तेज़ होता गया । फिर वह उसके बिलकुल निकट पहुंच गयी । उसने देखा कि वह प्रकाश प्रचंड अग्नि से निकल रहा है । और उस अग्नि के चारों ओर कई पुरुष बैठे हैं ।

सोनिया ने उन पुरुषों की संख्या गिनी । उनमें से एक पुरुष थोड़े ऊंचे और भव्य आसन पर बैठा था । भव्य आसन पर बैठा पुरुष उम्र में बाकी सब से बड़ा था और उसके सर पर ताज और हाथ में राजदंड था । सोनिया बेधड़क उस के पास चली गयी और फिर उसने झुककर उसका अभिवादन किया । पुरुष ने भी बड़ी सहजता से उसे स्वीकार किया ।

साधारण आसनों पर बैठे एक पुरुष ने सोनिया से पूछा, "बेटी, कौन हो तुम? इस ठंड में और इस दुर्गम इलाके में तुम कैसे आयी हो? इतना जोखिम उठाकर तुम्हारे यहाँ आने का कारण क्या है!" फिर उस पुरुष ने अपना परिचय दिया और बोला, "हम सब महीने राजा हैं । हमारी कुल संख्या बारह है । हम बारी-बारी से इस सिंहासन पर बैठते हैं और राज करते हैं । हमारे नाम हैं: जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्तूबर, नवंबर और दिसंबर । इस समय दिसंबर राजा सिंहासन पर विराजमान हैं ।"

तुरंत सोनिया राजा दिसंबर की ओर मुड़ी और उसे अपनी कहानी सुनाने लगी ।

सोनिया की कहानी सुनकर राजा दिसंबर उदास हो गया । उसने सोनिया को सांत्वना दी और राजा जून को संबोधित करते हुए बोला कि उसकी जगह वह सिंहासन पर बैठे और शासन संभाले । फिर उसने राजा जून के लिए सिंहासन खाली कर दिया ।

राजा जून जैसे ही उस पर बैठा, वैसे ही

उसने अपने मुँह से कुछ कहा । उसका कहना था कि तुरंत चारों तरफ की बर्फ पिघल कर पानी हो गयी और देखते ही देखते वहाँ हरियाली ही हरियाली दिखने लगी । वहाँ कई तरह की फसलें थीं, पौधे थे और उन पौधों पर फूल थे ।

राजा जून की अनुमति से सोनिया ने अपनी झोली फूलों से भर ली । राजा ने यह भी वरदान दिया कि ये फूल उसके घर पहुंचने तक सूखेंगे नहीं ।

सोनिया की इच्छा-पूर्ति हो जाने के बाद राजा जून सिंहासन से उठकर फिर साधारण आसन पर जा बैठा और उसकी जगह राजा दिसंबर ने सिंहासन संभाल लिया । फिर चारों तरफ बर्फ ही बर्फ दिखने लगी और वहाँ कोहरा छाने लगा ।

सभी राजाओं को नमन करके सोनिया वहाँ से लौट पड़ी और पहाड़ों-जंगलों को पार करती हुई फूलों से भरी झोली के साथ अपने घर आ पहुंची ।

अपने सामने सोनिया को सही-सलामत पाकर नटाशा और उसकी माँ बुरी तरह से चौंक उठीं और फिर हैरान-सी उसे देखने लगीं । वे दरअसल सोच भी नहीं सकती थीं कि इस बेमौसम में सोनिया दुर्गम पहाड़ों से झोली-भर फूल ले आयेगी और असंभव को संभव कर दिखायेगी । वे ईर्ष्या से जल-भुन गयीं । और उसे डांटते हुए बोलीं, "बताओ, तुम्हें ये फूल कहां से मिले और कैसे मिले?"

सोनिया के साथ जो कुछ बीता था, उसने वह पूरा का पूरा कह सुनाया । सोनिया का वृत्तांत सुनकर नटाशा के मन में भी उन फूलों

को पाने की इच्छा जागी, और वह सोनिया द्वारा बताये गये रास्ते से जंगलों पहाड़ों को पार करती हुई उसी बर्फीले स्थल पर पहुंची। वहां उसे वही प्रकाश दीख पड़ा। वह उसी की दिशा में चलती हुई राजाओं के पास पहुँची।

राजाओं ने जब एक और लड़की को वहाँ देखा तो उससे उसके आने का कारण पूछा। नटाशा का उत्तर बड़ा ही दंभपूर्ण था। बोली, "तुम्हें इससे क्या लेना-देना? तुम अपना काम करो।" और यह कहकर वहाँ से चलने को हुई।

वह अभी चार कदम भी चल नहीं पायी थी कि सिंहासन पर बैठे राजा ने अपना दंड हिलाया और बर्फ की परतें उस पर कड़ कड़ करती आ गिरीं। नटाशा उन्हीं परतों के नीचे दब गयी।

बेटी का इंतजार करते-करते सोनिया की सौतेली माँ भी बेटी को ढूंढने घर से निकल पड़ी और उसी प्रकार जंगलों-पहाड़ों को पार करती हुई उस प्रकाशमान अग्नि के निकट पहुंची। वहां उसे वही राजा मिले और उनसे उसने वैसे ही व्यवहार किया जैसे कि उसकी बेटी नटाशा ने किया था। ज़ाहिर है कि उसकी वही गत हुई जो उसकी बेटी की हुई थी। वह भी अब बर्फ की परतों के नीचे दब गयी थी।

माँ और बेटी जब वापस घर न आयीं तो सोनिया को चिंता हुई। वह उन्हें खोजने घर से निकल पड़ी और उन्हीं दुर्गम स्थलों को पार करती उन राजाओं के पास पहुंची। राजाओं ने उसे बताया कि कैसे माँ-बेटी ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया और फिर कैसे दंडित हुईं।

सोनिया ने विनम्रता पूर्वक उनसे उनके व्यवहार के लिए क्षमा मांगी और उन्हें फिर से जीवित कर देने के लिए प्रार्थना की। राजाओं ने वैसा ही किया।

अब तीनों माँ-बेटियाँ खुशी-खुशी घर लौट रही थीं। वे फूल जो जून के महीने में खिलने चाहिए थे, वे क्योंकि दिसंबर में खिले थे उन्हें दिसंबरी फूल नाम दिया गया। तभी से यह नाम प्रचलित हो गया है।

फैसला कैसे हुआ

पीतांबर एक साधारण किसान था, लेकिन लक्ष्मीपुर के लोग उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे और उसे मुखिया की तरह मानते थे। आपस में कोई लफड़ा-लफाड़ा हो जाता या कोई समस्या खड़ी हो जाती, तो वे उसी के पास जाते। पीतांबर भी उन्हें खूब बढ़िया सलाह देता। उसकी ख्याति एक बुद्धिमान् और न्यायप्रिय व्यक्ति के रूप में फैल चुकी थी।

जब धीरे-धीरे पीतांबर की उम्र ढल गयी और वह बूढ़ा हो चला तो उसने अपनी ज़िम्मेदारी अपने बेटे वल्लभ को सौंप दी। वल्लभ ही अब गाँव का मुखिया माना जाने लगा। पीतांबर ने नाम तो कमाया था, पर वह कोई ज़मीन-जायदाद नहीं बना पाया था। उसके पास केवल आधा एकड़ ज़मीन थी जिसे अब वल्लभ जोत रहा था। इसी से उसकी गुज़र होती थी।

एक दिन रामदेव नाम का एक बूढ़ा व्यक्ति और उसका बेटा किशन आपस में किसी बात पर झगड़ा हो जाने के कारण वल्लभ के पास आये। रामदेव बोला, "देखो वल्लभ, क्योंकि मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और इस उम्र में अपनी रोटी नहीं कमा सकता, इसलिए मेरा बेटा मुझे रोटी खिलाने में आना-कानी कर रहा है। मेरा यही एक सहारा है, और यही अब आना-कानी करने लगा है। बताओ, मैं इस अवस्था में अब कहाँ जाऊँ?"

अब बारी किशन की थी। दह बोला, "जब मेरा बूढ़ा बाप कमाता था तो पैसा पानी की तरह बहाता था। इसकी आदतें भी खराब हो गयी थीं जिससे हमारी पुश्तैनी संपत्ति धीरे-धीरे खत्म हो गयी। अब नौबत ऐसी आ गयी है कि मैं मुश्किल से ही

चंदन कपूर

मेहनत-मज़दूरी करके अपना पेट पाल रहा हूँ। ऐसी हालत में मैं अपने बाप के लिए क्या करूं? आप ही बताइए!"

दोनों की बातें सुनकर वल्लभ थोड़ी देर के लिए चुप रहा। फिर बोला, "रामदेव चाचा, किशन जो कुछ कमाता है, उससे उसी का पेट नहीं भरता। ऐसी हालत में वह तुम्हें क्या खिलाये और आप क्या खाये! उसकी लाचारी समझो!"

वल्लभ का फैसला सुनकर दोनों बाप-बेटा वल्लभ के यहाँ से लौट आये। कुछ दिन इसी तरह बीते। इस बीच वल्लभ का बूढ़ा बाप पीतांबर चल बसा। इधर वल्लभ के भी एक बेटा हुआ जो धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। उसका नाम था नीलांबर। नीलांबर बड़े-प्यार से पल रहा था।

एक दिन वल्लभ के पास महेंद्रपाल और उसका बेटा विशाल आये। महेंद्रपाल भी एक बूढ़ा व्यक्ति था। वह वल्लभ से बोला, "बेटा, विशाल मेरा इकलौता पुत्र है—यह तुम सब लोग जानते हो। मैंने कई तरह की तकलीफें उठाकर उसे पाला-पोसा है। अब मेरी उम्र-ज़्यादा हो गयी है। विशाल कहता है कि वह अब मेरा बोझ उठा नहीं सकेगा। मेरी अवस्था ऐसी है कि मैं अपना बोझ खुद नहीं उठा सकता। अब मेरे सामने एक ही चारा है कि मैं भीख माँगूं। इसलिए तुम से न्याय मांगने आया हूँ।"

वल्लभ ने विशाल की ओर देखा। इस पर विशाल बोला, "वल्लभ दादा, मेरे पिता ने
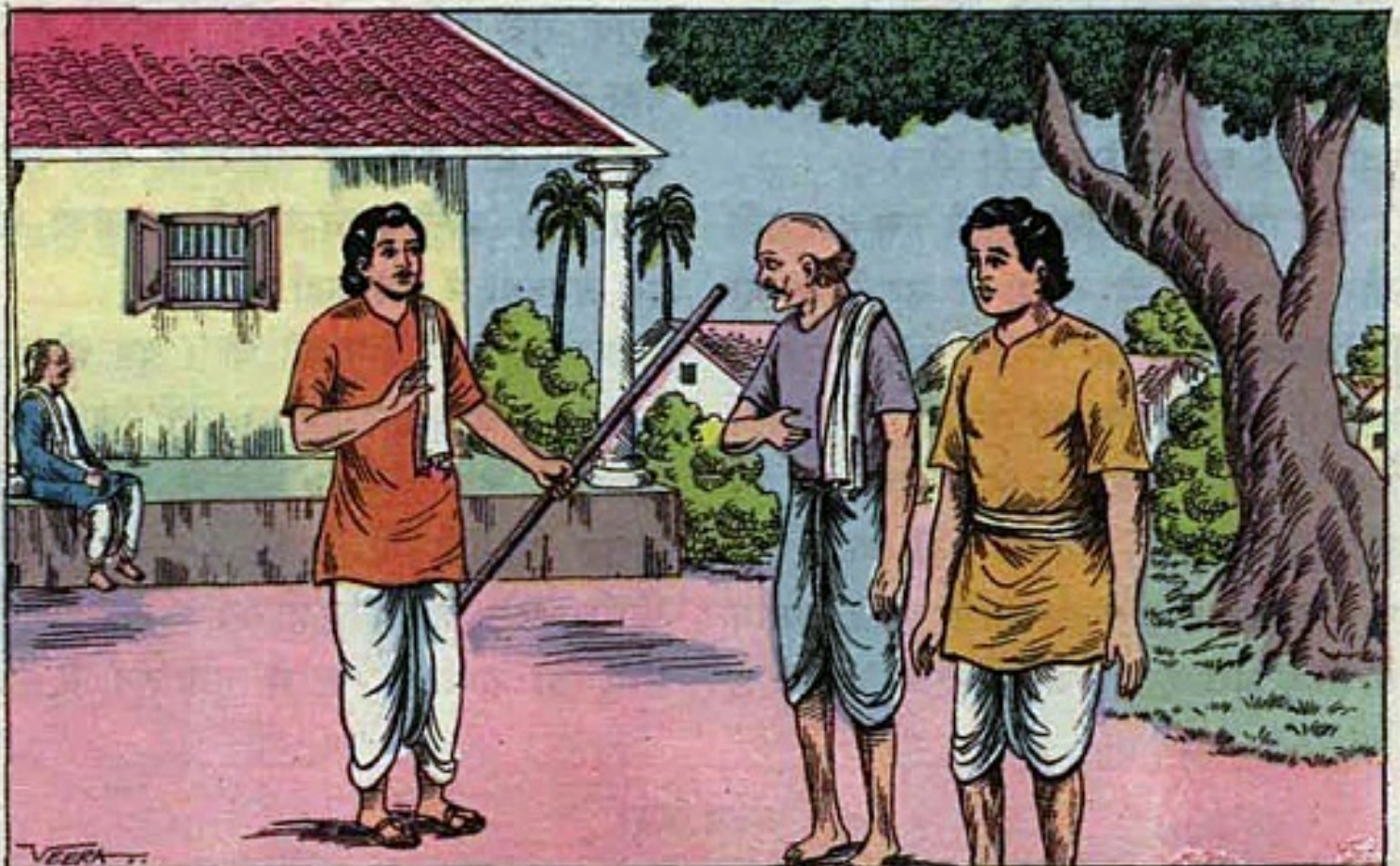
"उस मामले में वल्लभ ने किशन के पक्ष में फैसला दिया था । और जब महेंद्रपाल और विशाल अपना मामला लेकर उसके पास पहुँचे तो उसने महेंद्रपाल के पक्ष में फैसला दिया । यह सनकीपन नहीं तो और क्या है! कभी बेटे का पक्ष तो कभी बाप का पक्ष । कितनी अटपटी बात है यह!" भूषण ने अपना तर्क दिया ।

भूषण का तर्क सुनकर सोहन पहले चुप रहा, फिर बोला, "भूषण, न्याय करने वाला व्यक्ति भी तो आखिर इंसान ही होता है न!उसके फैसल में अगर उसके निजी जीवन की झलक आ जाये तो इसमें हैरानी की क्या बात है? यह एक हक़ीकत है जिसे नकारना मुश्किल होगा ।"

"क्या मतलब? अपनी बात स्पष्ट करो ताकि उसे मैं ठीक से पकड़ सकूँ ।" भूषण बोला ।

"ठीक है, तो सुनो!" सोहन ने उत्तर दिया, "जब वल्लभ ने रामदेव के बेटे किशन के पक्ष में फैसला दिया था, तब वह खुद को अपने पिता पीतांबर की देख-रेख भारी पड़ रही थी । इसलिए उसके फैसले में उसकी झलक आ गयी और उसने रामदेव के खिलाफ फैसला सुना दिया ।"

"तब उसने महेंद्रपाल के हक में फैसला क्यों सुनाया?" भूषण ने पूछा ।

"इसका कारण भी सुनो । जब उसने महेंद्रपाल के पक्ष में फैसला सुनाया, तब तक उसका पिता पीतांबर चल बसा था और उसके अपने एक बेटा पैदा हुआ था । तब वह स्वयं एक पिता की स्थिति में आ चुका था और अपने भविष्य के बारे में चिंतित था । इसीलिए उसने पिता के पक्ष में फैसला दिया ।" सोहन ने उत्तर दिया ।

अब बात भूषण की समझ में आ गयी । वह समझ गया कि फैसले अपने अनुभवों के आधार पर ही सुनाये जाते हैं और इसी आधार पर लोग दूसरों से नीति-अनीति की बात भी करते हैं ।

चालाक खरगोश

उस जंगल के निकट ही एक किसान का खेत था। किसान ने काफी मेहनत करके खेत में साग-सब्ज़ियों की क्यारियाँ तैयार कीं और उसे अपनी मेहनत का फल भी मिलने लगा।

उधर एक खरगोश रोज़ उसकी सब्ज़ियों का सफाया करने लगा।

किसान ने एक फंदा तैयार किया ताकि जब चोर आये तो उसमें फंस जाये।

अगली सुबह जब किसान अपने खेत पर पहुंचा तो वह खरगोश को फंदे में फंसा देखकर बड़ा खुश हुआ। "तो तू है जो इतने दिन मेरी साग-सब्ज़ियाँ चुराता रहा। ठहर, तुझे चोरी करने का मज़ा चखाता हूँ।" इतना कहकर किसान चला गया।

ठीक उसी समय उसे वहाँ एक गीदड़ दिखाई दिया। गीदड़ को देखकर ख़रगोश बड़े ठाठ से मुस्कराया। इस पर गीदड़ बोला, "क्यों बेटा, यहाँ कहाँ बैठे हो? और तुम्हारे गले में यह रस्सी कैसी है? बड़े ही खुश नज़र आ रहे हो?"

खरगोश अब और भी खुश नज़र आने की कोशिश करने लगा, और बोला, "क्या बताऊँ बड़े भाई। बच्चों की तबीयत ठीक नहीं थी। इसलिए वैद्य जी के पास जा रहा था। रास्ते में गाय फूफी मिल गयी। बोली-मेरी बेटी की शादी है। तुम्हें ज़रूर मेरे साथ चलना होगा। - मैं ने लाख कहा कि मैं बहुत ज़रूरी काम पर जा रहा हूँ, पर वह न मानी। उसने मुझे यहाँ बांध दिया और जाते-जाते कहती गयी कि कोई मुझे लिवाने आयेगा। अब तुम ही बताओ, बड़े भाई, मैं क्या करूँ! बच्चों को दवाई तो पहुँचानी ही होगी, नहीं तो उनकी हालत बिगड़ सकती है। हाँ, अगर तुम शादी पर जाना चाहते हो तो तुम मेरी जगह आ जाओ।"

गीदड़ खरगोश की बातों में आ गया और बोला, "ठीक है! मैं शादी पर जाना

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

चाहता हूँ। मुझे कभी कोई नहीं बुलाता," और इतना कहकर उसने खरगोश को आज़ाद कर दिया।

जब गीदड़ खरगोश की जगह पर आ गया और वहाँ अच्छी तरह जकड़ा गया तो खरगोश बोला, "मैं वैद्य जी के पास जा रहा हूँ। शादी वाले अभी आ रहे होंगे!" और यह कहकर वह वहाँ से खिसक लिया और पास की एक झाड़ी में जा छिपा। इतने में किसान अपने हाथ में एक मज़बूत छड़ी लिये वहाँ आ पहुंचा। उसने जब गीदड़ को खरगोश की जगह पाया तो बोला, "तो यह बात है! साग-सब्ज़ी खाने वाला गायब है और उसकी जगह यह मुर्गी-चोर आ फंसा है। कोई बात नहीं! इसकी ही पहले खबर लेता हूँ!" और यह कहकर वह गीदड़ को अंधाधुंध पीटने लगा, और उसे तब तक पीटता रहा जब तक कि उस छड़ी के रेशे नहीं निकल आये। किसान की छड़ी तब पूरी तरह खत्म हो गयी तो वह अपने कुत्तों को लाने चल पड़ा।

इतने में खरगोश फिर वहाँ दिखाई दिया और गीदड़ से बोला, "क्यों, बड़े भाई! मजे में तो हो न? अभी शादी वाले तुम्हें लिवाने नहीं आये?"

गीदड़ एकाएक रो पड़ा। बोला, "मुझे शादी पर नहीं जाना है। मुझे जल्दी से इस फंदे से छुड़ा दो!"

खरगोश होशियार था। वह समझता था कि गीदड़ को फंदे से छुड़ाने का क्या मतलब होगा। वह अपनी जान गंवाना नहीं चाहता था। इसलिए उसने गीदड़ से इधर-उधर की हांकते हुए किसान का इंतज़ार करना ठीक समझा। तब तक गीदड़ मारे डर के थर-थर कांपता रहा।

थोड़ी ही देर में उसे कुत्तों के साथ किसान आता दिखाई दिया। जैसे ही खरगोश ने किसान को आते देखा, वैसे ही उसने गीदड़ का फंदा खोलना शुरू का दिया। गीदड़ अब आज़ाद था। गीदड़ को देखकर किसान के कुत्ते वहीं खड़े हो गये और उस पर झपटने का मौका देखने लगे। तब खरगोश और गीदड़ वहाँ से निकल भागे और अलग-अलग दिशाओं में दौड़कर उन्होंने अपनी जान बचायी।

ह्वेल का फुहारा

अकसर कहा जाता है कि ह्वेल मछली पानी का ज़बरदस्त फुहारा छोड़ती रहती है ।

लेकिन यह ग़लत है । वह पानी का फुहारा नहीं छोड़ती, केवल भाप छोड़ती है । गोता लगाते-लगाते ह्वेल के फेफड़ों में काफी गरम हवा जमा हो जाती है, जिसे वह अपनी नाक के छेद से बाहर फेंकती है । जब यह गरम हवा एकबारगी बाहर की ठंडी हवा से आ मिलती है तो वह घनीभूत होकर फुहारे-सी दिखने लगती है ।

एक अनोखा पक्षी

न्यूगिनी और आस्ट्रेलिया में एक पक्षी पाया जाता है जिसे 'बाउअर' कहते हैं । यह पक्षी घास-फूस और सूखी लकड़ियाँ बीनकर लाता है और उन्हें धनुषाकार में पिरो देता है । फिर वह उन में रंग-बिरंगी वस्तुएँ पिरोता है जिससे वह धनुष खूब आकर्षक दिखे ।

किस लिए?

ताकि वह अपने साथी को आकर्षित कर सके ।

खतरनाक कीड़े-मकोड़े

युद्ध और दुर्घटनाओं में तो आदमी मौत का शिकार होता ही है, लेकिन मलेरिया मच्छर भी आदमी की जान लेने में पीछे नहीं है । दूसरे शब्दों में, पचास प्रतिशत मौतें इसी मच्छर के कारण होती हैं । यह आज से नहीं, पाषाण युग से चला आ रहा है । अफ्रीका और एशिया में हर साल मच्छर के काटने से मरने वालों की संख्या लगभग दस लाख होगी ।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मार्च १९९१ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी

R. B. Shinde

R. B. Shinde

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ जनवरी १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

नवम्बर १९९० की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : होकर बड़ा बनूँगा सैनिक !

द्वितीय फोटो : करता इसीलिए जिमनास्टिक !!

प्रेषक : कु. रश्मि मूंधड़ा, द्वारा एम. एल. मूंधड़ा, ब्लाक १२, हाइवे रोड, कलोल (गुज)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३६/-

चन्दा भेजने का पता :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वड्पलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

नक़ल में मज़ा असल!
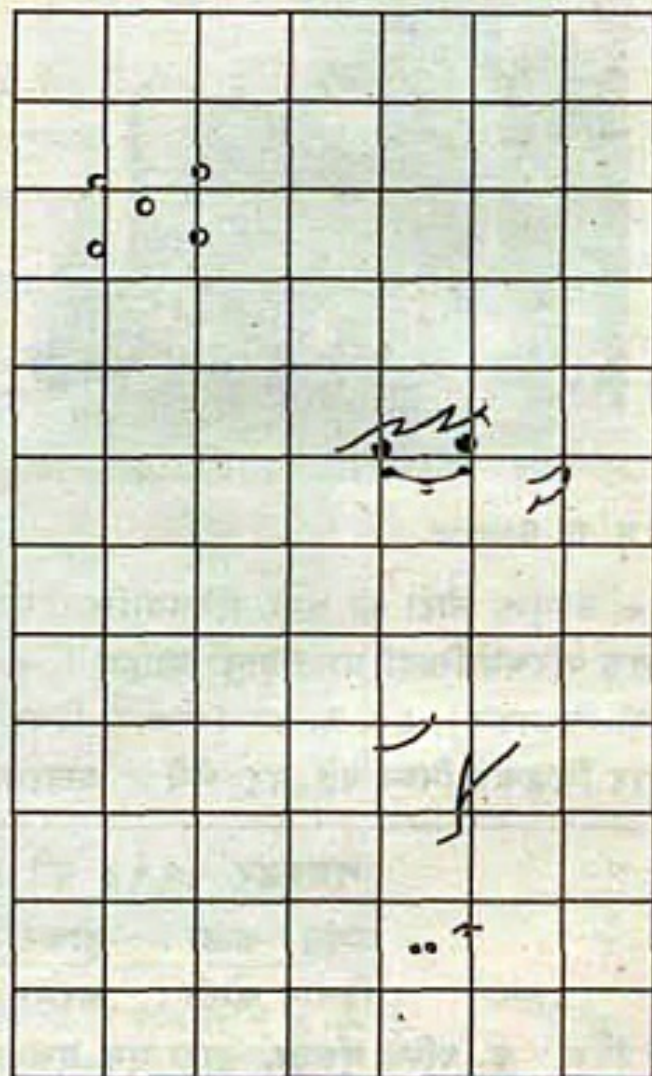
ऊपर दिए चौकोर खानों में ध्यान से हैण्डीब्वॉय के चित्र की नक़ल उतारो. और ज़्यादा मज़ा चाहो तो उसमें रंग भर दो.

Luxor Mickey Mouse Colours
Enter the fairyland of colours.

Luxor Bambino colour set
An adventure with colours.

Luxor Colour Pens
Sing a rainbow, paint a song

Luxor Disney fun set
For fun, frolic and fantasy.

Luxor Sign Pen
To make your little dreams come true.

Donald Duck Magic Colours
For the magician in you.

Disney Inoxcolor Plastic Crayons
Colourful times ahead.

© THE WALT DISNEY CO.

CLARION D 254 R

Bestsellers
PENNED BY LUXOR

LUXOR PEN CO., 229, Okhla Industrial Estate,
Phase III, New Delhi-110020, India.
Tel: 633318, 6833372, 6835607. Tlx: 031-75069
SIGN IN. Fax: 011 6847602. Tel: Delhi (Sales):
522956, Bombay: 6730251, Calcutta: 250407